संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

2

brethren
sunday
school

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-2 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गास्पल हाल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति**

एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1. धर्म का प्रचारक – नूह 1
2. बाबुल का गुम्मट 4
3. इब्राहीम की बुलाहट 6
4. इब्राहीम और लूत 8
5. सदोम का विनाश 10
6. आशीष के लिए याकूब का दावा 12
7. याकूब – बेतेल में 15
8. यूसुफ के भाई 17
9. याकूब – मिस्र में 21
10. इस्राएल – दासत्व में 23
11. मूसा – मिस्र और मिद्यान में 25
12. मूसा और फिरौन 28
13. मिस्र पर विपत्तियाँ 31
14. मिस्र से छुटकारा 33
15. चट्टान से पानी 35
16. यरदन पार करना 38
17. यरीहो पर विजय 40
18. एली और उसका परिवार 43
19. राजा शाऊल 45
20. दाऊद का अभिषेक 48

21. सुलैमान की बुद्धिमत्ता 50
22. एलिय्याह का स्वर्गारोहण 53
23. शूनेमिन स्त्री का पुत्र 55
24. नामान 58
25. जकर्याह और एलीशिबा 61
26. प्रभु यीशु का बपतिस्मा 64
27. प्रभु यीशु और शैतान 66
28. सूबेदार के सेवक की चंगाई 68
29. दुष्टात्माओं का निकाला जाना 70
30. दस कोढ़ी 72
31. कनानी स्त्री 74
32. प्रभु यीशु पानी पर चले 76
33. अच्छा सामरी 78
34. प्रभु यीशु का रूपान्तरण 80
35. लाज़र 82
36. प्रभु यीशु का विजय प्रवेश 84
37. यहूदा इस्करियोती 86
38. पतरस का इंकार 88
39. पुनरुत्थान 90
40. स्वर्गारोहण 92

पाठ–1

धर्म का प्रचारक - नूह

उत्पत्ति, अध्याय 6-8; 2 पतरस 2:3

आपने हनोक के विषय में सुना, जो 300 वर्षों तक परमेश्वर के साथ-साथ चला। वह कितने वर्ष पृथ्वी पर रहा? 365 वर्ष। उसके पश्चात् क्या हुआ? परमेश्वर ने उसे जीवित ही स्वर्ग पर उठा लिया। उसका एक परपोता था जो बहुत ही धर्मी था, और वह था नूह।

पाठ :

नूह के दिनों में मनुष्य बहुत ही दुष्ट थे। हम जानते हैं कि परमेश्वर पाप से घृणा करते हैं। धर्मी परमेश्वर पाप को दंड दिए बगैर नहीं रह सकते। उन्होंने मनुष्यजाति को बाढ़ से नष्ट करने का निश्चय किया। परमेश्वर ने सब मनुष्यों में मात्र एक ही व्यक्ति को धर्मी पाया, और वह था—नूह। बाइबल में लिखा है, ''परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही'' (उत्पत्ति 6:8)। नूह के विषय में यह भी कहा गया है, ''अपने विश्वास के कारण उसने संसार को दोषी ठहराया, और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है।'' (इब्रा. 11:7)।

परमेश्वर ने नूह से कहा, ''मनुष्यों के उपद्रव से पृथ्वी भर गई है, इसलिए मैं मनुष्यों और पृथ्वी, दोनों को नष्ट करूंगा। इसलिए तू अपने लिए गोपेर वृक्ष की लकड़ी का जहाज़ बना, और उसमें कमरे बना और उस पर अंदर और बाहर राल लगाना।'' परमेश्वर ने नूह को उस जहाज़ का नाप भी दिया। उसे 450 फुट लम्बा, 75 फुट चौड़ा और 45 फुट ऊंचा बनाया जाना था। जहाज़ को तीन खण्डों में विभाजित किया जाना था, निचला, मध्य व ऊपरी। उसमें एक खिड़की और एक द्वार बनाया जाना था।

नूह ने ठीक वही किया जो परमेश्वर ने उससे कहा था। जहाज़ बनाने में नूह को लगभग 100 वर्ष लगे। और वह लोगों से प्रचार करता रहा, और आने वाली बाढ़ के बारे में चेतावनी देता रहा, ताकि वे जहाज़

में प्रवेश करके बच सकें। फिर भी किसी ने विश्वास नहीं किया।

नूह की एक पत्नी और तीन विवाहित पुत्र भी थे। जब जहाज़ बनकर तैयार हो गया, तब सही समय पर परमेश्वर ने नूह को परिवार समेत जहाज़ में जाने की आज्ञा दी, और हर एक जाति के पक्षी और जानवरों के जोड़े को अपने साथ ले जाने को कहा। बलिदान के योग्य शुद्ध जानवरों के सात-सात जोड़े जहाज़ में गए।

सब के अंदर जाने के पश्चात् स्वयं परमेश्वर ने द्वार बंद कर दिया। एक सप्ताह के बाद वर्षा होने लगी। उस समय तक लोगों के लिए, बारिश एक अनजान बात थी, क्योंकि पृथ्वी से जो कोहरा उठता था, उसी से पृथ्वी सिंच जाती थी। 40 दिन और 40 रात निरंतर वर्षा होती रही और पूरी पृथ्वी पानी से भर गई। पृथ्वी पर चलने वाले सभी प्राणी मर गए। परन्तु जहाज़ पानी पर सुरक्षित तैरता रहा। जहाज़ के अंदर सभी सुरक्षित थे। बाढ़ का पानी 150 दिन तक पृथ्वी पर भरा रहा।

परमेश्वर ने नूह को और अन्य सभी प्राणियों को स्मरण रखा। बाढ़ का पानी कम होने लगा। अंततः परमेश्वर ने नूह को जहाज़ से बाहर आने को कहा। वह अपनी पत्नी, अपने तीन बेटों और उनकी पत्नियों समेत बाहर आया और अपने साथ सभी पशु-पक्षियों को भी लाया। धन्यवादी हृदय से नूह ने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाया।

लागू करना :

यद्यपि इस पृथ्वी पर हज़ारों परिवार थे, फिर भी परमेश्वर ने केवल नूह के परिवार को बचाया, क्योंकि केवल वही लोग थे जिन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। विश्वास और आज्ञाकारिता के बिना उद्धार नहीं है। जहाज़ प्रभु यीशु का प्रतीक है। जिस प्रकार बचने का एकमात्र साधन जहाज़ था, उसी प्रकार उद्धार का एकमात्र मार्ग प्रभु यीशु मसीह हैं। याद रखें कि जहाज़ का एक ही द्वार था। प्रभु यीशु ने कहा ''द्वार मैं ही हूँ''।

याद करें :

यहोशू 24:15 मैं तो अपने घराने समेत परमेश्वर ही की सेवा नित्य करूँगा।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने जलप्रलय क्यों भेजा?
2. जहाज़ में कितने लोग थे?
3. अन्य सभी लोग क्यों नाश हुए?
4. 'एक द्वार' से हम क्या सीखते हैं?
5. भविष्य में आने वाले न्याय से हम कैसे बच सकते हैं?

✯✯✯✯

पाठ-2

बाबुल का गुम्मट

उत्पत्ति 11:1-9

बाढ़ के बाद कितने मनुष्य बचे थे? केवल आठ! उन दिनों के बारे में ज़रा सोचो जब पूरी दुनिया में केवल आठ ही लोग थे! नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत थे। उनको पुत्र, पोते और परपोते उत्पन्न हुए, जिससे संसार में आबादी हज़ारों, लाखों की हो गई।

पाठ :

नूह के तीन पुत्रों से तीन जातियाँ बन गईं और वे तेजी से बढ़ने लगे। वे एक ही भाषा बोलते थे। पूर्व दिशा में बढ़ते हुए वे शिनार* पहुँचे और समतल भूमि पाकर वहाँ बस गए। उन्होंने ईंटें बनाना, दीवारें, घर और गुम्मट बनाना सीख लिया। फिर उनके मन में एक विचार आया। उन्होंने कहा, ''आओ, हम एक गुम्मट वाला शहर बना लें, जिसकी ऊँचाई आकाश तक होगी, ताकि हम अपने लिए नाम कमाएं और हमें सारी पृथ्वी पर फैलना न पड़े।''

शिनार देश के मैदान में उन्होंने गुम्मट बनाना आरंभ किया, और उनका कार्य देखने के लिए परमेश्वर स्वर्ग से उतर आए। अपने ही तरीके से स्वर्ग तक पहुँचने के उनके प्रयत्न को देखकर परमेश्वर दुखी हुए। वे लोग अपने बारे में ही सोच रहे थे। उन्हें अपनी योग्यता पर घमण्ड था, और वे परमेश्वर को भूल गए। आज भी ऐसा ही होता है। अपने आत्मविश्वास और अभिमान के कारण मनुष्य परमेश्वर को भूल जाते हैं।

परमेश्वर ने उनकी भाषा में गड़बड़ी डालने का निश्चय किया, ताकि वे एक दूसरे की बात समझ न सकें। और जब परमेश्वर ने ऐसा किया,

** यह स्थान ईराक में है, यूफ्रातेस और तिगरिस नदियों के बीच।*

तब वे अपने निर्माण कार्य को जारी नहीं रख सके। और कार्य को बंद करना पड़ा। फलस्वरूप वे एक दूसरे से अलग हो गए और पृथ्वी में फैल गए। परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी, कि तुम संख्या में बढ़ जाओ और पृथ्वी पर फैल जाओ, परन्तु उनकी भाषा में गड़बड़ी होने तक उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। विभिन्न भाषाओं के शोर ने इतनी गड़बड़ी फैला दी कि उन्होंने उस स्थान का नाम **बाबुल** रखा, जिसका अर्थ है *''गड़बड़ी''*।

लागू करना :

परमेश्वर हमें रोकते हैं, जब भी हम स्वयं अपनी महिमा के लिए कार्य करते हैं। हमें हमेशा वही करना चाहिए जो परमेश्वर हमसे कहते हैं, तब वे हमें आशीष देंगे। परमेश्वर, स्वार्थी और अभिमानियों से नफरत करते हैं। परमेश्वर हमें आशीष देंगे, यदि हम उनका आदर करें।

याद करें :

भजन 127:1 यदि घर को परमेश्वर न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा; यदि नगर की रक्षा परमेश्वर न करे, तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।

प्रश्न :

1. लोग गुम्मट क्यों बनाना चाहते थे?
2. वे निर्माण कार्य पूरा क्यों नहीं कर सके?
3. ''बाबुल'' का अर्थ क्या है?
4. हम इस घटना से क्या सीखते हैं?

✯✯✯✯

पाठ–3

इब्राहीम की बुलाहट

उत्पत्ति 12:1-9, प्रेरितों के काम 7:2

नूह के पश्चात् लगभग दसवीं पीढ़ी में, नूह के पुत्र शेम के परिवार में एक पुरुष हुआ जिसका नाम इब्राहीम था। वह कसदियों के ''ऊर'' नामक देश (आधुनिक ईराक) में रहता था।

पाठ :

एक दिन महिमामय परमेश्वर ने इब्राहीम को दर्शन देकर कहा, ''अपने देश और अपने लोगों को छोड़कर उस देश को जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।''

ऊर देश के लोग मूर्तिपूजक थे। जब इब्राहीम ने परमेश्वर की बुलाहट को सुना, तब उसने विश्वास किया और वही किया जो उससे कहा गया था। परमेश्वर ने इब्राहीम से बहुत वायदे भी किए। परमेश्वर ने कहा, ''मैं तुझे आशीष दूँगा, तुझे एक बड़ी जाति बनाऊँगा, तेरा नाम महान करूँगा और तुम्हें सभी राष्ट्रों के लिए आशीष का कारण बनाऊँगा।''

एक अनजान देश में जाने के लिए अपना घर छोड़ देना, इब्राहीम और सारा को मूर्खतापूर्ण लगा होगा। फिर भी, इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और कोई प्रश्न किए बगैर ही निकल चला। उसका पिता तेरह और भतीजा लूत अपने परिवार सहित उसके साथ हो लिए। वे हारान नाम के स्थान पर पहुँचे जहाँ कुछ समय पश्चात् तेरह की मृत्यु हो गई।

तेरह की मृत्यु के बाद परमेश्वर की आज्ञानुसार इब्राहीम अपनी पत्नी सारा को लेकर कनान देश की तरफ चला। उसका भतीजा लूत भी उनके साथ गया। जहाँ कहीं भी इब्राहीम ठहरा, वहाँ पर उसने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए वेदी बनाई। जब वह कनान

पहुँचा, तब परमेश्वर ने उससे कहा, ''यही वह स्थान है जो मैं तुम्हारे वंश को दूँगा।''

लागू करना :

परमेश्वर की आशीष हमारी पूर्ण आज्ञाकारिता पर निर्भर करती है। परमेश्वर विश्वसनीय हैं जो अपने वायदों को पूरा करते हैं। इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, इसीलिए वह ''विश्वासियों का पिता'' कहलाया। परमेश्वर पर इब्राहीम का विश्वास हमारे लिए उदाहरण है।

याद करें :

इब्रानियों 11:8 विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया, तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ।

प्रश्न :

1. पहली बार जब परमेश्वर ने इब्राहीम को बुलाया, तब वह कहाँ रहता था?
2. परमेश्वर ने इब्राहीम से कौन-कौन से वायदे किए?
3. जहाँ कहीं भी इब्राहीम ठहरा, वहाँ उसने क्या किया?
4. इब्राहीम, विश्वासियों का पिता क्यों कहलाता है?

✫✫✫✫

पाठ-4

इब्राहीम और लूत

उत्पत्ति 13

पिछले पाठ में हमने सीखा कि किस प्रकार इब्राहीम परमेश्वर की बुलाहट सुनकर कनान देश में आया। उसका भतीजा लूत उसके साथ था, परन्तु परमेश्वर ने लूत को नहीं बुलाया था। मार्गदर्शन के लिए इब्राहीम परमेश्वर की तरफ देखता था, परन्तु लूत केवल इब्राहीम पर निर्भर था।

पाठ :

इब्राहीम और लूत, दोनों ही बहुत अमीर हो गए। उनके पास भेड़ों और पशुओं का इतना बड़ा झुण्ड हो गया कि उनके चरवाहे चारागाह के लिए आपस में झगड़ा करने लगे।

इस बात से इब्राहीम दुखी हुआ। वह परमेश्वर का जन था, और मेल से रहना चाहता था। अतः इब्राहीम ने लूत से कहा, ''हम भाई हैं, और हमें झगड़ा नहीं करना चाहिए। यह देश बहुत बड़ा है, अतः हम एक दूसरे से अलग होकर रहें।'' इस बात पर सहमति हो गई। अब जगह चुनने की बात आई। इब्राहीम ने लूत को पहले चुनने की आजादी दी। हम देखते हैं कि वरिष्ठ होने के बावजूद भी इब्राहीम ने निःस्वार्थता और नम्रता दिखाई। बच्चों, यहाँ हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण है।

लूत इस विचार से खुश था। वे ऊँचे स्थान पर थे, इसलिए वह भूमि का सही अवलोकन कर सका। उसने यरदन नदी से सिंची हुई तराई को देखा, और अपने जानवरों के लिए सही चारागाह देखकर उसे चुन लिया, और पूर्व की ओर चला गया। वह तराई वाले नगरों में रहा और सदोम की तरफ अपना तंबू खड़ा किया।

दूसरी ओर, इब्राहीम कनान देश में रहने लगा। कितनी आसानी से

उसने समस्या को सुलझाया। लूत को अपना भाई मानने के कारण इब्राहीम ने सावधानी बरती कि उसे ठेस न पहुंचे। दोनों ही जीवते परमेश्वर की सेवा करते थे। इब्राहीम के लिए सभी धन-दौलत से कीमती उसकी गवाही थी, अत: उसने परमेश्वर के नाम का अनादर न होने की सावधानी बरती।

लागू करना :

इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, परंतु लूत सांसारिक लाभ की खोज में था। इब्राहीम और लूत की सोच में बहुत अंतर था। लूत सांसारिक व्यक्ति को और इब्राहीम आत्मिक व्यक्ति को चित्रित करता है।

याद करें :

इब्रानियों 10:39 पर हम हटने वाले नहीं कि नाश हो जाएं पर विश्वास करने वाले हैं कि प्राणों को बचाएं।

प्रश्न :

1. इब्राहीम और लूत क्यों अलग हुए?
2. इब्राहीम के जीवन में कौन सी बात थी जो उसके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी?
3. लूत ने अपने बसने के लिए कौन सा स्थान चुना, और क्यों?
4. लूत किस प्रकार के मनुष्य को चित्रित करता है?
5. इब्राहीम किस प्रकार के मनुष्य को चित्रित करता है?

☆☆☆☆

पाठ–5

सदोम का विनाश

उत्पत्ति 19

इब्राहीम से अलग होकर लूत ने अपना तंबू सदोम नामक शहर के पास खड़ा किया। परंतु शीघ्र ही वह जाकर उस शहर के एक मकान में रहने लगा। परमेश्वर की दृष्टि में सदोम के लोग बहुत दुष्ट और पापी थे।

पाठ :

जो भूमि लूत ने चुनी वह बहुत अच्छी और उपजाऊ थी, परन्तु वहाँ रहने वाले लोग बहुत ही पापी थे। सदोम और अमोरा नाम के दो शहरों के लोग इतने पापी थे कि परमेश्वर उन्हें नजर अन्दाज नहीं कर सके।

क्या आपको नूह के समय की घटना याद है? मनुष्यजाति के पाप के कारण परमेश्वर ने उन्हें बाढ़ से नाश किया था, परन्तु धर्मी नूह और उसके परिवार को बचा लिया। अब परमेश्वर ने सदोम के विनाश का निर्णय लिया, और यह बात इब्राहीम को बताई, क्योंकि इब्राहीम परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करता था। इब्राहीम ने परमेश्वर से प्रार्थना की और कहा कि वे सदोम का विनाश न करें क्योंकि वहाँ पर लूत भी रहता है। परमेश्वर ने इब्राहीम की प्रार्थना सुनी, और उससे कहा कि, यदि सदोम में दस भी धर्मी लोग हों तो फिर मैं उसका विनाश नहीं करूँगा। परन्तु वह शहर अत्यंत पाप से भरा हुआ था, इस कारण परमेश्वर ने उसका विनाश कर दिया। फिर भी परमेश्वर ने इब्राहीम को स्मरण करके दो स्वर्गदूतों को सदोम शहर भेजा कि लूत को बचा लें।

स्वर्गदूतों के आगमन पर लूत उन्हें अपने घर ले गया। उन्होंने एक साथ भोजन किया और जब सोने का वक्त हुआ, तब सदोम के लोग आए और लूत के घर को चारों तरफ से घेरकर उन्होंने मेहमानों से दुर्व्यवहार करना चाहा। तब जितने लोग दरवाज़े के बाहर थे, उन सबको दूतों ने अंधा कर दिया और उन्होंने लूत को चेतावनी दी कि जल्दी ही

उस शहर को छोड़कर चला जाए, परन्तु लूत ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और दोनों बेटियों का हाथ पकड़कर उन्हें सुरक्षित सदोम के बाहर पहुँचा दिया, क्योंकि परमेश्वर उनके प्रति दयालु थे। जैसे ही वे शहर से बाहर पहुँचे, एक दूत ने उनसे कहा, ''अपनी जान लेके भाग जाओ, और पीछे मुड़कर हरगिज़ मत देखना और तराई में कहीं भी मत रुकना। पहाड़ पर भाग जाओ नहीं तो तुम भी भस्म हो जाओगे!'' जब लूत परिवार समेत शहर से बाहर पहुँचा, तब परमेश्वर ने सदोम और अमोरा पर आग और गन्धक बरसाई, जिससे पूरा शहर और सारे मनुष्य नाश हो गए।

जब वे भाग रहे थे, तब लूत की पत्नी ने पीछे मुड़कर देखा और वह नमक का खंभा बन गई। प्रेरित पतरस अपनी पत्री में इस बात का उल्लेख करते हैं। (2 पतरस 2:6-9)

लागू करना :

परमेश्वर एक सच्चे न्यायी हैं। वह पापियों का न्याय करेंगे। अवज्ञा दण्ड लाती है। लूत सदोम के लोगों के साथ नाश नहीं हुआ था, परन्तु उसने अपनी सारी संपत्ति खो दी थी। वे बाल-बाल बच गए। परमेश्वर की संतानों को पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में धन एकत्र करना चाहिए। किसी दिन यह पृथ्वी जल जाएगी और तत्व तप्त होकर पिघल जाएंगे।

याद करें :

रोमियों 6:23 पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है।

प्रश्न :

1. पहले सदोम की अवस्था कैसी थी?
2. परमेश्वर ने सदोम को क्यों नाश किया?
3. परमेश्वर ने लूत को कैसे बचाया?
4. लूत की पत्नी को क्या हुआ?
5. इस पाठ से आप क्या सीखते हैं?

✯✯✯✯

पाठ–6

आशीष के लिए याकूब का दावा

उत्पत्ति 27

परमेश्वर के समयानुसार इब्राहीम और सारा को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उन्होंने उसका नाम रखा–इसहाक, जिसका अर्थ है ''हँसी''। परमेश्वर के द्वारा इब्राहीम को दी गई आशीषों का वह वारिस था क्योंकि वह प्रतिज्ञानुसार प्राप्त पुत्र था।

इसहाक ने बड़े होकर रिबका से विवाह किया और उनके दो जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न हुए। एसाव और याकूब। एसाव बड़ा था, परन्तु उसने उन प्रतिज्ञाओं को तुच्छ जाना, जो परमेश्वर ने उसके दादा इब्राहीम से की थी। एक दिन जब वह थका हुआ और भूखा था तब एक कटोरी दाल के बदले उसने अपने पहलौठे के अधिकार को याकूब को बेच दिया।

पाठ :

इसहाक जब बूढ़ा हो गया और उसे धुंधला दिखने लगा, तब उसने अपने बड़े पुत्र एसाव को बुलाया और कहा, ''बेटा, मैं बूढ़ा हूँ, और मृत्यु के करीब हूँ, इसलिए जाकर हिरन का शिकार करो, और मेरी पसंद के अनुसार उसे पकाकर मेरे पास लाओ, ताकि मैं उसे खाऊँ और अपनी मृत्यु से पहले तुम्हें आशीष दूँ।''

इसहाक ने एसाव से जो कुछ कहा, वह रिबका ने सुन लिया। जब एसाव शिकार करने निकला, तब रिबका ने याकूब को बुलाकर उसके पिता की कही हुई बातें बता दीं। फिर उसने कहा, ''मेरे बेटे, मेरी बातें ध्यान से सुनो। बकरियों के झुण्ड में जाकर दो अच्छे बकरी के बच्चे लेकर आओ, ताकि मैं तुम्हारे पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाऊँ। तब उसे लेकर अपने पिता के पास जाना, ताकि उसे खाकर वह अपनी मृत्यु से पहले तुम्हें आशीष दे।'' याकूब ने अपनी माता से कहा, ''मेरे भाई एसाव के पूरे शरीर में कितने बाल हैं, परन्तु मेरी त्वचा तो चिकनी है। यदि वो मुझे टटोलेंगे तो इस धोखे को समझ जाएँगे, और मुझे आशीष के स्थान पर श्राप ही प्राप्त होगा।'' उसकी माँ रिबका ने उससे

कहा, ''हे मेरे बेटे, सुनो, श्राप मुझ पर पड़े, और अब जैसा मैंने कहा है, जाकर वैसा ही करो।'' अतः वह चला गया और अपनी माँ के कहे अनुसार किया। उसकी माँ ने उसके पिता की रुचि के अनुसार भोजन तैयार किया। फिर उसने एसाव के हाथों और गरदन को बकरी की खाल से ढककर उसे एसाव के वस्त्र पहना दिए।

याकूब ने अपने पिता के पास जाकर कहा, ''हे मेरे पिता!'' तुरंत ही इसहाक ने पूछा, ''तुम कौन हो?'' इसहाक निश्चित करना चाहता था कि वह एसाव ही है। याकूब ने उत्तर दिया, ''मैं आपका पहलौठा पुत्र एसाव हूँ। मैंने वही किया जो आपने कहा था, इसलिए अब उठकर इस हिरण का माँस खाइए और मुझे आशीष दीजिए।'' इसहाक ने पूछा, ''यह तुम्हें इतनी जल्दी कैसे मिल गया?'' याकूब ने उत्तर दिया, ''परमेश्वर ही उसको मेरे सामने ले आए।'' देखो बच्चो, याकूब ने कैसे अपने झूठ को छिपाने के लिए परमेश्वर का नाम लिया!

फिर इसहाक ने याकूब से कहा, ''मेरे बेटे, मेरे पास आओ, ताकि मैं तुम्हें हाथ लगाकर यह जानूं कि तुम वास्तव में एसाव ही हो या नहीं।'' फिर इसहाक ने कहा, ''आवाज़ तो याकूब की तरह है, परन्तु हाथ एसाव की तरह हैं। क्या तुम वास्तव में मेरे पुत्र एसाव हो?'' याकूब ने उत्तर दिया, ''हाँ मैं हूँ।'' तब इसहाक ने कहा, ''हे मेरे पुत्र, अपने शिकार के माँस को यहाँ लाओ कि मैं खाऊँ और तुझे आशीष दूँ।'' याकूब जो माँस और जो दाखमधु लाया था, उसे अपने पिता के पास ले गया। इसहाक ने खाया-पीया और फिर याकूब को समृद्धि की आशीष के साथ परिवार का स्वामी भी ठहराया।

याकूब के बाहर जाते ही, एसाव शिकार करके लौटा, और अपने पिता की रुचि के अनुसार पकाकर, आशीर्वाद के लिए पहुँचा। इसहाक इस धोखे को जानकर बहुत दुखी हुआ, परन्तु वह आशीषों को बदल नहीं सकता था। एसाव फूट-फूट कर रोया, परन्तु उसने अपने पहलौठा होने के अधिकार को बेचकर परमेश्वर की आशीष को तुच्छ जाना था। परमेश्वर ने याकूब को चुना क्योंकि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता था, और प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी होना चाहता था।

एसाव बहुत क्रोधित हुआ और वह याकूब को जान से मारना चाहता

था। यह जानकर रिबका ने इसहाक से ज़िद की, कि याकूब को उसके मामा के पास पद्दनराम भेज दे। लड़कों के जन्म होने से पहले ही परमेश्वर ने रिबका को यह बता दिया था कि छोटा बेटा परमेश्वर की आशीषों का वारिस होगा। पहलौठे के अधिकार और पिता का आशीर्वाद पाने के लिए याकूब को धोखा करने की आवश्यकता नहीं थी। उसने गलती की और बाद में इसकी सज़ा उसे मिली।

याद करें :

1 पतरस 3:17 यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुख उठाने से उत्तम है।

प्रश्न :

1. इसहाक ने एसाव से क्या करने को कहा था?
2. याकूब ने किस प्रकार आशीर्वाद पाया?
3. याकूब अपने भाई एसाव के क्रोध से कैसे बचा?
4. याकूब में वह कौन सा गुण था, जो अच्छा था?

✯✯✯✯

पाठ-7
याकूब - बेतेल में
उत्पत्ति 28

पिछले पाठ में हमने सीखा कि रिबका चाहती थी कि याकूब अपने मामा के यहाँ पद्दनराम चला जाए ताकि एसाव के क्रोध से बच सके।

इसहाक ने याकूब को बुलाकर फिर से वह सारी आशीषें दीं जिसका वायदा परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था, और उसे यात्रा के लिए भेज दिया, और यह चेतावनी भी दी, कि किसी कनानी लड़की को अपनी पत्नी मत बनाना, क्योंकि वे लोग परमेश्वर की आराधना नहीं करते, परन्तु अपने मामा लाबान की एक बेटी से विवाह करना। याकूब चल दिया और सूर्यास्त होने पर लूज नामक एक स्थान पर पहुँचा, और खुली जगह पर एक पत्थर को तकिया बनाकर सो गया। वहाँ उसने एक विचित्र स्वप्न देखा।

उसने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है, और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं और उसने परमेश्वर को उसके ऊपर खड़े होकर यह कहते सुना, ''मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ। जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझे और तेरे वंश को दूँगा। तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और हर दिशा में फैलता जाएगा, और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। मैं तेरे संग रहूँगा और तुझे सुरक्षित रखूँगा और इस देश में वापस लाऊँगा।''

नींद से जागने पर याकूब ने कहा, ''निश्चय इस स्थान में परमेश्वर हैं, और मैं यह नहीं जानता था।'' उसने वह पत्थर उठाया जिसे तकिया बनाकर वह सोया था, और उसे खंभा बनाकर खड़ा कर दिया, उस पर तेल डालकर उस स्थान का नाम रखा-**बेतेल**, क्योंकि उसने कहा, ''यह परमेश्वर का भवन है।''

फिर याकूब ने एक मन्नत माँगी, और कहा, ''यदि परमेश्वर मेरे साथ रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिए रोटी और पहनने के लिए कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में सुरक्षित लौट आऊँ, तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। और यह पत्थर जिसका मैंने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा, और जो कुछ तू मुझे दे, उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।''

इस स्वप्न के बाद, जो वास्तव में परमेश्वर की ओर से एक दर्शन था, याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी।

लागू करना :

याकूब की तरह, हम भी अक्सर यह बिना जाने ही अपने कार्य के लिए निकल जाते हैं कि परमेश्वर हमारी देखभाल कर रहे हैं और हमारी अगुआई कर रहे हैं। इस बात को कभी-कभी ही परमेश्वर हम पर प्रकट करते हैं कि वह हमें संभालते हैं चाहे हम उनको स्मरण न करें। हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए और उनकी आशीषों की प्रतीक्षा करनी चाहिए। परमेश्वर ने अपनी संतानों को बहुत सी प्रतिज्ञाएं दी हैं। यदि आप अपना हृदय और अपना जीवन प्रभु यीशु को देंगे, तो वह आपको यह बताएंगे कि आपके जीवन के लिए उनकी क्या योजना है, और वह आपके साथ रहेंगे और आपको आशीष देंगे।

याद करें :

भजन 121:8 यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा।

प्रश्न :

1. याकूब पद्दनराम क्यों गया?
2. याकूब ने स्वप्न में क्या देखा?
3. परमेश्वर ने याकूब से क्या प्रतिज्ञा की?
4. याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल क्यों रखा, जहाँ वह सोया था?
5. याकूब के जीवन से हम क्या सीख सकते हैं?

✯✯✯✯

पाठ-8

यूसुफ के भाई

उत्पत्ति, अध्याय 42-45

बेतेल से चल कर याकूब पद्दनराम पहुँचा, जहाँ अपने मामा लाबान के साथ 20 वर्ष रहा। वहाँ उसने लिआ और राहेल से विवाह किया जो लाबान की बेटियाँ थीं। जब उसके पास अनेक दास-दासियाँ, और भेड़ बकरियों के झुण्ड हो गए और वह बहुत अमीर हो गया, तब वह सब कुछ लेकर अपनी पत्नियों और बच्चों समेत कनान देश को लौटा।

याकूब के एक पुत्री और 12 पुत्र थे। राहेल से उत्पन्न याकूब के पुत्र यूसुफ को उसके भाइयों ने व्यापारियों के हाथ बेच दिया, जो उसे खरीदकर मिस्र ले गए। वहाँ उसे पोतीपर नाम के एक मिस्री अधिकारी ने खरीद लिया। वहाँ से वह कारागार में पहुँच गया। फिर भी, परमेश्वर ने यूसुफ के साथ रहकर उसको आशीष दी। उसके परिवार को उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी, और याकूब ने सोचा कि उसकी मृत्यु हो चुकी है।

पाठ :

मिस्र के राजा फिरौन ने एक स्वप्न देखा, परन्तु ऐसा कोई नहीं मिला जो उस स्वप्न का अर्थ बता सके। उस समय यूसुफ स्वप्न का अर्थ बताने वाले के रूप में जाना जाता था, इसलिए उसे फिरौन के सामने लाया गया। राजा के स्वप्न का अर्थ था, कि सात वर्ष बहुत अधिक उपज के होंगे और उसके बाद के सात वर्ष अकाल पड़ेगा। फिरौन स्वप्न का अर्थ सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और यूसुफ को अपने देश का प्रधानमंत्री बना दिया। जैसा यूसुफ ने कहा था, सात वर्ष बहुतायत के आए, जिस के दौरान यूसुफ की सलाह से अनाज को एकत्र करके भंडार घरों में रखा गया। सात वर्ष के बाद सब देशों में अकाल पड़ा जो सात वर्षों तक चला। अन्य देशों के लोग अनाज खरीदने के लिए मिस्र आने लगे। याकूब ने भी अपने 10 पुत्रों को मिस्र भेजा। वे प्रधानमंत्री के पास आए, परन्तु नहीं जानते थे कि वह कौन है।

दसों भाइयों ने झुककर यूसुफ को दण्डवत् किया, और अनाज के लिए विनती की। उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना परन्तु यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया। यूसुफ ने उनके साथ अजनबी की तरह व्यवहार किया और उन पर जासूस होने का दोष लगाया। यूसुफ ने उनसे अनेक प्रश्न पूछे क्योंकि वास्तव में वह अपने पिता और अपने छोटे भाई बिन्यामीन के बारे में जानना चाहता था। उसने उन्हें कारागार में डाल दिया, परंतु तीसरे दिन छोड़ दिया। यूसुफ ने अपने सेवकों से कहा कि उनके बोरों को अनाज से भर दो और हर एक के रुपए को भी बोरे में रख दो। उसने उन्हें यह कहकर भेज दिया कि यदि फिर से आओगे, तो उन्हें अपने साथ बिन्यामीन को भी लाना होगा। वे खुशी से चले गए। रास्ते में रुककर जब एक गदहे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला तो उसको अपने रुपए दिखाई पड़े। वे सब अत्यंत डर गए कि अब उन पर चोरी का दोष लगेगा।

घर पहुँचकर उन्होंने अपने पिता को सारी बातें बताईं। कुछ समय बाद जब मिस्र से लाया हुआ अन्न समाप्त हो गया, तब याकूब ने उन्हें फिर से मिस्र जाकर अन्न लाने को कहा। उन्होंने अपने पिता से कहा कि यदि हम जाएंगे तो बिन्यामीन को अवश्य साथ ले जाना होगा। याकूब बहुत दुखी हो गया। उसने यूसुफ को खो दिया था, और अब डरता था कि सबसे छोटे पुत्र के साथ भी कुछ दुर्घटना ना हो जाए। उसकी अति प्रिय पत्नी रिबका से उसके दो ही पुत्र थे यूसुफ और बिन्यामीन।

जब वे मिस्र पहुँचे, तो दूसरे भाइयों के साथ बिन्यामीन को देखकर यूसुफ बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी, कि वह उन सबके लिए भी भोजन का प्रबंध करे। यूसुफ के भाइयों को जब यूसुफ के घर पहुँचाया गया तब वे बहुत डर गए, और उन्होंने यूसुफ के घर के अधिकारी को उन रुपयों के बारे में बताया जो उनके बोरों में मिला था, और उन्होंने कहा, ''हम उन रुपयों को अपने साथ लाए हैं। और अन्न खरीदने के लिए और रुपए भी लाए हैं। हम नहीं जानते कि वे रुपए हमारे बोरे में किसने रखे।'' उसने उन से कहा कि चिन्ता न करें और उसने उनको पाँव धोने के लिए पानी दिया, और

उनके गदहों के लिए चारा भी दिया। दोपहर को यूसुफ आया और बिन्यामीन का अभिवादन किया और उनके पिता का हाल-चाल पूछा। फिर वे भोजन करने बैठे।

सवेरे यूसुफ ने उन्हें भेज दिया परन्तु वह उनकी और परीक्षा लेना चाहता था। उसने उनके बोरे अन्न से भरवाए और अपना सोने का प्याला बिन्यामीन के बोरे में रखवा दिया। वे नगर से निकले ही थे कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी को उनके पीछे भेजा। अधिकारी ने उन पर दोष लगाकर कहा, ''क्यों तुम लोगों ने भलाई के बदले बुराई की है? मेरे स्वामी के सोने का प्याला चुराकर तुमने गलत किया।'' उन्होंने स्वयं को निर्दोष बताकर कहा, ''तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए और हम सब अपने प्रभु के दास हो जाएँगे।'' यूसुफ के घर के अधिकारी ने कहा, ''तुम में से जिसके पास वह निकलेगा, वह मेरा दास होगा, और तुम सब निरपराध ठहरोगे।'' उसने उनके बोरों की तलाशी ली, और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में निकला। बिन्यामीन को अकेले दासता के लिए भेजे बगैर, वे सभी उसके साथ वापस यूसुफ के घर गए। यहूदा ने यूसुफ से कहा कि यदि हम बिन्यामीन को लिए बगैर वापस जाएँ तब तो हमारा पिता शोक में मर जाएगा।

जब यूसुफ ने अपने पिता और बिन्यामीन के प्रति उनकी परवाह और प्रेम देखा तो, स्वयं को भाइयों पर प्रकट करने से पहले सभी दासों और मिस्रियों को कमरे से बाहर निकाल दिया। उसने अपने भाइयों से कहा, ''मैं यूसुफ हूँ।'' तब वे सब रोए और एक दूसरे से गले मिले। यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, ''तुमने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया, परन्तु परमेश्वर ने इसे अपने मित्र इब्राहीम के वंश को सुरक्षित रखने का कारण बनाया।'' यूसुफ ने अपने भाइयों को गाड़ियाँ, और भोजनवस्तु से लदी हुई गदहियाँ भी दीं, ताकि वे जाकर उसके पिता याकूब को और समस्त परिवार को लेकर वापस मिस्र आ जाएँ, जहाँ पर अकाल के दिनों में भी अन्न बहुतायत से था।

लागू करना :

यूसुफ, प्रभु यीशु मसीह को चित्रित करता है। वह ऐसे शाासक हैं

जिनका मनुष्यों ने तिरस्कार किया। हमारे पापों के कारण उनको क्रूस पर मरना पड़ा, परन्तु जब हम पश्चाताप करते हैं, तब वह हमें स्वीकार करते हैं और स्वयं को हम पर प्रकट करते हैं।

याद करें :

भजन संहिता 133:1 देखो यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!

प्रश्न :

1. याकूब के पुत्र मिस्र क्यों गए?
2. यूसुफ ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया?
3. यूसुफ ने अपने भाइयों से बिन्यामीन को साथ लाने के लिए क्यों कहा?
4. यूसुफ ने अपने भाइयों को कैसे सांत्वना दी?
5. यह घटना हमें क्या शिक्षा देती है?

☆☆☆☆

पाठ-9

याकूब - मिस्र में

उत्पत्ति, अध्याय 46-49

यूसुफ के भाइयों ने अपने पिता याकूब के पास लौटाकर बताया कि यूसुफ अभी जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है। याकूब को विश्वास नहीं हुआ, परन्तु जब उसने यूसुफ के द्वारा भेजी हुई मिस्र की अच्छी अच्छी वस्तुएँ और गाडियाँ देखी, तब उसका चित्त स्थिर हो गया। उसने कहा, ''हाँ यह सच है, मेरा पुत्र यूसुफ जीवित है, मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसको देखूँगा।''

पाठ :

याकूब ने अपनी यात्रा आरंभ की और बेर्शेबा पहुँचा। वहाँ परमेश्वर ने फिर से उससे बातें कीं और कहा, ''मिस्र में जाने से मत डर, मैं तेरे संग चलूँगा और वहाँ तुम्हें आशीष दूँगा।'' अत: याकूब अपने सभी पुत्रों और उनके परिवार समेत मिस्र में आ गया। जब वे करीब पहुँचे, तब यूसुफ अपने रथ मे उनसे मिलने और अपने पिता का स्वागत करने गया। वे एक दूसरे के गले लगकर रोए। अंतत: याकूब को शांति मिली।

फिरौन ने यूसुफ से कहा कि मिस्र देश में जो सबसे भूमि है वह अपने परिवार को दे दो। यूसुफ ने उन्हें गोशेन देश दे दिया, जहाँ उनके पशुओं के लिए चारागाह की बहुतायत थी, और वे वहाँ बस गए। यूसुफ अपने पाँच भाइयों और पिता को फिरौन के सम्मुख ले गया। फिरौन ने याकूब का अभिवादन किया और उससे उदारता से व्यवहार किया, और उन्होंने जो चाहा सब कुछ दिया। याकूब 17 वर्ष मिस्र में रहा, और उसका परिवार फला-फूला और बहुत बढ़ गया।

कुछ समय के पश्चात् यूसुफ को समाचार मिला कि उसका पिता बीमार है। याकूब की उम्र अब 147 वर्ष थीं। यूसुफ अपने दोनों पुत्रों, मनश्शे और एप्रैम को लेकर अपने पिता से मिलने गया। याकूब की आँखें धुंधली हो गईं थीं और वह बहुत कमज़ोर हो गया था, परन्तु जब

उसने युसूफ के आने का समाचार सुना तो उठ कर बैठ गया। उसने यूसुफ को परमेश्वर की वे प्रतिज्ञाएँ स्मरण दिलाईं जो लूज में परमेश्वर ने उसे दी थीं। और फिर उसने यूसुफ और उसके पुत्रों को आशीर्वाद दिया।

जब यूसुफ लड़कों को उनके दादा के पास लाया तब उसने मनश्शे को याकूब के दाहिने हाथ की तरफ रखा क्योंकि वह बड़ा था। परन्तु याकूब ने अपने दाहिने हाथ को एप्रैम के सिर पर रखा जो छोटा था, और बांए हाथ को मनश्शे के सिर पर रखा जो बड़ा था। उसने यूसुफ को दुगनी आशीष दी और कहा कि, ''तेरे पुत्र इस्राएल के गोत्र के मुखिया होंगे, परन्तु एप्रैम, मनश्शे से भी महान होगा।''

याकूब ने यूसुफ से वादा करवाया कि उसके शरीर को प्रतिज्ञा के देश कनान में इब्राहीम के साथ दफनाया जाएगा।

फिर अपनी मृत्यु से पहले उसने अपने सभी पुत्रों को आशीर्वाद दिया।

लागू करना :

जिस प्रकार याकूब अनेक वर्षों के दुखों को सहने के पश्चात् यूसुफ को देखकर आनंदित हुआ, उसी तरह परमेश्वर के लोग भी आनंदित होंगे और शांति पाएंगे जब वे अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह को देखेंगे।

याद करें :

यशायाह 46:4 तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा, और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा।

प्रश्न :

1. याकूब को कैसे विश्वास हुआ कि यूसुफ जीवित है?
2. यूसुफ ने किस प्रकार मिस्र में याकूब का स्वागत किया?
3. फिरौन ने किस प्रकार इस्राएल (याकूब) को उदारता दिखाई?
4. यूसुफ के पुत्रों के नाम क्या हैं?
5. याकूब ने यूसुफ के पुत्रों को किस प्रकार आशीर्वाद दिया?

✯✯✯✯

पाठ–10

इस्राएल – दासत्व में

निर्गमन–1

अनेक वर्ष बीत गए, यूसुफ, उसके भाई और उनकी पीढ़ी के सब लोगों की मृत्यु हो गई। उनके वंशज इब्री परिवार, इस्राएल की संतान कहलाने लगे। वे गिनती में बढ़ गए और एक बड़ा राष्ट्र बन गए।

पाठ :

फिर एक समय आया जब एक नया फिरौन मिस्र का राजा बना, जो यूसुफ को नहीं जानता था। उसने देखा कि इस्राएल की संतान मिस्रियों से भी अधिक संख्या में बढ़ रहे हैं, और उसे इस बात का भय था कि वे मिस्रियों को दबाकर उन पर शासन करने लगेंगे। उसने सोचा कि कड़ी मेहनत करवा कर उनकी संख्या को कम किया जा सकता है, इसलिए फिरौन ने उन्हें विशाल शहर बनाने के कार्य में लगा दिया। उनसे क्रूरता की गई और भूखा रखकर मारा-पीटा गया, फिर भी वह राष्ट्र बढ़ता ही गया।

तब फिरौन ने कहा कि मिस्री धाइयाँ सभी इस्राएली लड़कों को पैदा होते ही मार डालें (परंतु धाइयों ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वे परमेश्वर का भय मानती थीं)। उसके पश्चात् फिरौन ने आज्ञा दी कि इस्राएल में पैदा होने वाले लड़कों को नील नदी में फेंक दिया जाए।

इस प्रकार इस्राएलियों का जीवन अत्यंत कष्टकारी हो गया। अपने नवजात शिशुओं की दशा के कारण रोते और कराहते रहे। परमेश्वर ने उनके रोने को सुना और उनके कराहने को जाना। परमेश्वर की दृष्टि उन पर थी, और वे उनके छुटकारे की तैयारी कर रहे थे। जब हमारे ऊपर बड़ा क्लेश और दुख आता है, तब परमेश्वर वह सब कुछ देखते और जानते हैं, और चाहते हैं कि हम उनसे सहायता प्राप्त करें।

परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी कि वे कनान देश उनके

वंशजों को देंगे। परमेश्वर ने याकूब और उसके पुत्रों को सदाकाल के लिए मिस्र नहीं भेजा था। परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा था कि वे उनको वहाँ से निकालकर कनान ले जाएँगे।

जब लोग सुख-सुविधा में जी रहे थे और उनके पास खाने-पीने को बहुतायत से था, तब वे वहीं रहना चाहते थे, परन्तु जब उन पर विपत्ति आई, तब ही उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को स्मरण किया। फिर वे मिस्र से निकलकर उस स्थान को जाने के लिए सहमत हुए जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया था।

लागू करना :

केवल विपत्ति आने पर ही हम परमेश्वर को स्मरण करते हैं। हमें सदैव परमेश्वर पर विश्वास करते हुए अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित करना चाहिए।

याद करें :

भजन संहिता 107:13 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने सकेती से उनका उद्धार किया।

प्रश्न :

1. फिरौन ने इस्राएल की संतानों को क्यों सताया?
2. फिरौन ने उनके साथ क्या दुष्टता की?
3. परमेश्वर ने अपने लोगों के सताव की अनुमति फिरौन को क्यों दी?
4. इस पाठ से हम क्या आत्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं?

✯✯✯✯

पाठ-11

मूसा - मिस्र और मिद्यान में

निर्गमन 2:1-22, प्रेरितों के काम 7

जब मिस्र के राजा फिरौन ने यह आज्ञा दी, कि इस्राएलियों के नवजात लड़के नदी में फेंक दिए जाएं, तब परमेश्वर अपने लोगों को मिस्र से छुटकारा देने की तैयारी कर रहे थे।

पाठ :

उसी समय एक लेवी पुरुष अम्राम की पत्नी योकेबेद को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह एक सुंदर बालक था, और उसके माता-पिता ने परमेश्वर पर विश्वास करते हुए, उस बालक को 3 महीने तक अपने घर में छिपाकर रखा। जब वे उसे और छिपा न सके, तब उसकी माता ने सरकंडों की एक टोकरी लेकर उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाई कि उसमें पानी न भरे, और बालक को उसमें रखकर नील नदी के तीर पर कांसों के बीच छोड़ आई। उसकी बेटी मरियम दूर से बालक को देखती रही कि उसके साथ क्या होगा।

तभी फिरौन की बेटी नहाने के लिए नदी के तीर पर आई। उसने वह टोकरी देखी और अपनी दासी को उसे ले आने के लिए भेजा। टोकरी खोलने पर उसने उसमें बालक को देखा। बच्चा रोने लगा तो उसे तरस आ गया। उसने कहा, ''यह तो किसी इब्री का बालक होगा'' परन्तु उसने उसे फेंक देना नहीं चाहा। मरियम ने तुरंत उसके पास आकर कहा, ''क्या मैं किसी इब्री स्त्री को लाऊँ जो आपके लिए इस बालक को दूध पिलाए?'' फिरौन की बेटी ने अनुमति दी तो वह जाकर अपनी माता को बुला लाई। फिरौन की बेटी ने उससे कहा, ''इस बालक को ले जाकर मेरे लिए दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी। उसने उसका नाम मूसा रखा, क्योंकि उसे पानी में से निकाला गया था। कितने अद्‌भुत तरीके से परमेश्वर ने उसकी देखभाल की। उसकी माता को अपने ही बच्चे की देखभाल के लिए मजदूरी मिली। अपनी

माता से ही उसे पता चला कि वह मिस्री नहीं इब्री है। उसने यह भी सीखा कि इस्राएल का परमेश्वर उसका परमेश्वर है, और इस्राएली लोग उसके भाई हैं। बाद में मूसा को फिरौन के महल में रहने के लिए ले जाया गया, जहाँ रहकर उसको उन सब बातों का प्रशिक्षण मिला, जो राजकुमारों को दिया जाता है।

मूसा जब 40 वर्ष का हुआ, तब उसने अपने इब्री भाइयों की सहायता करने का निर्णय किया, क्योंकि वे दासत्व में दयनीय जीवन बिता रहे थे। एक दिन उसने एक मिस्री को देखा जो एक इब्री को मार रहा था। मूसा ने सोचा कि कोई देख नहीं रहा, इसलिए उसने मिस्री पुरुष की हत्या कर दी और उसे गाड़ दिया। अगले दिन उसने दो इब्रियों को लड़ते देखा और उनको रोकने लगा।

एक इब्री ने उससे कहा, ''किस ने तुझे हम लोगों पर हाकिम ठहराया है? क्या तुम मुझे मार डालना चाहते हो, जैसे तुमने मिस्री को मारा था?'' यह सुनकर मूसा समझ गया कि उसका अपराध छिपा नहीं है, और बहुत डर गया। फिरौन ने भी यह बात सुनी और उसने मूसा को मार डालना चाहा।

तब मूसा मरुभूमि से होकर भागा और मिद्यान देश में पहुँचा। वहाँ वह एक कुँए के पास आकर बैठ गया। मिद्यान के याजक की सात बेटियाँ अपने पिता की भेड़-बकरियों को पानी पिलाने लाईं। जब चरवाहे आकर उन को हटाने लगे, तब मूसा ने खड़े होकर उन की सहायता की और उनकी भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। उनके जल्दी घर पहुँचने पर उनके पिता ने आश्चर्य किया। उन्होंने अपने पिता से कहा, ''एक मिस्री पुरुष ने हमें चरवाहों से छुड़ाया, और हमारे लिए बहुत जल भर के भेड़-बकरियों को पिलाया।'' उनके पिता ने पूछा, ''वह कहाँ है? तुम उसको क्यों छोड़ आईं? उसको बुला लाओ कि वह हमारे साथ भोजन करे।'' मूसा आकर उसके साथ रहने को प्रसन्न हुआ। उसने मूसा का विवाह अपनी बड़ी बेटी सिप्पोरा के साथ कर दिया। मूसा अपने ससुर की भेड़-बकरियाँ चराने लगा। वहाँ वह चालीस वर्ष रहा और उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए।

लागू करना :

मूसा मिस्र के राजमहल में बड़ा हुआ। ऊँची पदवी और धन-दौलत जिसका वह आनंद उठा सकता था, उसको उसने महत्वहीन समझा। परन्तु अपने लोगों की सहायता करके, उनके साथ हानि उठाने को उसने उत्तम समझा। (इब्रानियों 11:24-25)। आप लोग भी जैसे-जैसे बड़े हो रहे हैं, आपको इस संसार की खुशियाँ और दुष्टता को छोड़कर परमेश्वर को चुनना चाहिए और उनके मार्गों पर चलना चाहिए। निश्चय ही आप सांसारिक खुशियों से वंचित हो जाओगे, परन्तु स्वर्गीय संपत्ति के वारिस हो जाओगे।

याद करें :

इब्रानियों 11:24 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर, फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इंकार किया।

प्रश्न :

1. मूसा, फिरौन की बेटी का पुत्र क्यों कहलाता था?
2. मूसा नाम का क्या अर्थ है?
3. मूसा मिस्र से क्यों भागा?
4. मिस्र से भागकर वह कहाँ गया?
5. उसने किससे विवाह किया?
6. वह कितने वर्ष वहाँ रहा?

☆☆☆☆

पाठ–12

मूसा और फिरौन

निर्गमन अध्याय 3–7

मिद्यान में मूसा के चालीस वर्षों के दौरान, मिस्र में इस्राएली कष्ट उठा रहे थे। वे क्रूर और कठोर मालिकों के आधीन गुलामी कर रहे थे। उन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी, और उनकी दोहाई को परमेश्वर ने सुना और इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दी हुई प्रतिज्ञा को स्मरण किया।

पाठ :

एक दिन मूसा होरेब पर्वत पर भेड़ों को चरा रहा था, तब उसने एक विचित्र दृश्य देखा। परमेश्वर के एक दूत ने आग की लपटों में जलती हुई झाड़ी में से उसको दर्शन दिया, परन्तु झाड़ी भस्म नहीं हो रही थी। जलती झाड़ी में से परमेश्वर ने मूसा को पुकार कर कहा, ''मैंने मिस्र में अपने लोगों की दुर्दशा को देखा है, और उनकी चिल्लाहट को सुना है; इसलिए मैं नीचे उतर आया कि हूँ उनको छुड़ाऊँ। अब मैं तुम्हें फिरौन के पास भेजता हूँ ताकि तुम उनको उसके हाथ से छुड़ाओ।''

मूसा ने बहुत से बहाने बनाए। उसने कहा, ''यह कार्य मैं नहीं कर सकता। मेरे अपने मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे, और मैं हकलाता भी हूँ।'' परमेश्वर ने कहा, ''अपनी लाठी को जमीन पर डाल दे।'' मूसा ने लाठी नीचे डाली और वह सर्प बन गई। परमेश्वर ने कहा, ''अब उसकी पूँछ पकड़ ले'' मूसा ने साँप की पूँछ पकड़ी तो वह फिर से लाठी बन गई। परमेश्वर ने मूसा को और भी चिन्ह दिए कि फिरौन को दिखाए, ताकि वह समझ जाए कि मूसा को वास्तव में सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने भेजा है। परमेश्वर ने मूसा से प्रतिज्ञा की, कि वह उसके साथ रहेंगे और उसे बताएँगे कि उसे क्या कहना है। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह अपने भाई हारून को भी अपने साथ ले जाए, जो उसकी तरफ से बातें करेगा। उन दोनों को एक साथ इस्राएल के वयोवृद्ध लोगों के पास जाकर, अपने लोगों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की योजना के

बारे में बताना था। फिर उन सबको मिलकर फिरौन के पास जाकर कहना होगा, कि "इब्रियों के प्रभु परमेश्वर ने हम से मुलाकात की है। इसलिए अब हमको मरूभूमि में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, ताकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाएं।"

जब वे फिरौन के पास गए, तब फिरौन ने उन्हें भेजने से इन्कार ही नहीं किया, बल्कि लोगों से और अधिक कठिन कार्य करवाया। तब इस्राएली मूसा और हारून से क्रोधित होकर कहने लगे कि, "तुमने हमारे कार्य को पहले से अधिक कठिन बना दिया है।"

मूसा और हारून मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर के पास गए। परमेश्वर ने छुटकारे की प्रतिज्ञा करते हुए उन्हें फिर फिरौन के पास भेजा। मूसा और हारून फिर से फिरौन के पास गए और परमेश्वर के दिए गए चिन्ह दिखाए। जब हारून ने लाठी को भूमि पर डाला, तो वह साँप बन गई। तब कुछ मिस्री जादूगरों ने भी अपनी लाठियों से साँप बनाए, परन्तु हारून की लाठी उन सब को निगल गई।

फिरौन ने फिर से लोगों को भेजने से इन्कार कर दिया, तब मूसा और हारून ने नदी के जल को लहू बना दिया। यह पहली विपत्ति थी।

लागू करना :

परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर के तरीके से किया जाना चाहिए। मिद्यान में मूसा का जीवन कठिन था, परन्तु परमेश्वर एक अगुआ होने के लिए उसको प्रशिक्षित कर रहे थे। परमेश्वर की सामर्थ्य आज भी उतनी ही महान है, जितनी मूसा के समय में थी। हमें परमेश्वर की सामर्थ्य में होकर कार्य करना चाहिए, अपनी नहीं। परमेश्वर उन लोगों का उपयोग करते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं, चाहे उनकी अपनी कोई योग्यता न हो।

याद करें :

भजन संहिता 32:8 मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुआई करूँगा। मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और तुझे सम्मति दिया करूँगा।

प्रश्न :

1. परमेश्वर मूसा के सामने कैसे प्रकट हुए?
2. पहला चिह्न कौन सा था जो परमेश्वर ने मूसा को दिया?
3. परमेश्वर ने मूसा को क्या संदेश दिया?
4. फिरौन के सम्मुख खड़े होने के लिए मूसा का सहायक कौन था?
5. किस प्रकार के व्यक्ति परमेश्वर का कार्य कर सकते हैं?
6. पहली विपत्ति कौन सी थी?

✯✯✯✯

पाठ-13

मिस्र पर विपत्तियाँ

निर्गमन, अध्याय 7-10

पिछले पाठ में हमने सीखा कि मूसा और हारून ने फिरौन से कहा कि इस्राएलियों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए जंगल में जाने दे, परन्तु आश्चर्यकर्मों को देखने के बावजूद फिरौन ने उन्हें जाने नहीं दिया।

पाठ :

जब फिरौन ने परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कठोर किया और इब्रियों के बोझ को और बढ़ा दिया, तब परमेश्वर ने मिस्रियों पर भयंकर विपत्तियाँ भेजीं। सबसे पहले परमेश्वर की आज्ञानुसार हारून ने नदी पर मारा और पूरा पानी लहू बन गया। मछलियाँ मर गईं और पानी बसाने लगा, परन्तु फिरौन ने अपना मन नहीं बदला। दूसरी विपत्ति मेंढ़कों वाली थी। वे गीली जगहों से बहुत अधिक मात्रा में आए और फिरौन के महल से लेकर सभी मिस्रियों के घरों में भर गए। फिरौन का मन बदला, परन्तु जैसे ही विपत्ति हटी, उसका मन फिर कठोर हो गया और उसने मूसा और हारून की बात नहीं मानी।

अगली विपत्ति कुटकियों (धूल में पाए जाने वाले प्राणी) का हमला था, जब हारून ने लाठी को धूल पर मारा। हरेक के ऊपर कुटकियाँ हो गईं, फिर भी, फिरौन ने लोगों को जाने नहीं दिया। उसके पश्चात् डांसों के (परेशान करने वाले कीट) झुण्ड आए। तब फिरौन ने कहा, ''तुम लोग बलिदान करने जाओ, परन्तु अधिक दूर नहीं जा सकते।'' मूसा इस बात से सहमत नहीं हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने उनसे तीन दिन की यात्रा की दूरी पर जाने के लिए कहा था और वे इसे बदलने वाले नहीं थे।

अगली विपत्ति मिस्रियों के घरेलू पशुओं पर आई, जिससे उनके सभी पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी जानवर नहीं मरा। अतः फिरौन जान गया कि परमेश्वर उनके और इस्राएलियों के बीच में अन्तर कर रहे हैं। इसके पश्चात् अगली विपत्ति में मनुष्यों और पशुओं पर

फोड़े और फफोले बन गए। फिर परमेश्वर ने मेघ गरजाकर आग और ओले बरसाए, और खेत की उपज, और मनुष्य और पशु मारे गए। अगली विपत्ति में टिड्डियाँ आईं और खेत में जो कुछ बचा था और सारे वृक्षों के फल और सब हरियाली खा गईं। नौवीं विपत्ति घोर अंधकार की थी, जो सभी मिस्रियों के घरों पर छा गया। इस बार फिरौन इस्राएलियों को भेजने के लिए तैयार हो गया, परन्तु उनके जानवरों को नहीं। परन्तु मूसा ने कहा, ''परमेश्वर के लिए मेलबलि और होमबलि चढ़ाने के लिए हमें अपने पशुओं को भी ले जाना होगा! उनका एक खुर तक छोड़कर नहीं जाएँगे, क्योंकि वहाँ पहुँचने पर ही हम जान पाएंगे कि क्या-क्या लेकर परमेश्वर की आराधना करनी होगी।'' परन्तु परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को कठोर किया और उसने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।

लागू करना :

जैसे इस्राएली मिस्र में फिरौन के गुलाम थे, वैसे ही इस संसार में मनुष्य शैतान के गुलाम हैं। फिरौन शैतान की तस्वीर है जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की आराधना करने से रोकता है। परन्तु परमेश्वर सर्वसामर्थी हैं। यदि हम उन पर विश्वास करें तो वह हमें शैतान की सामर्थ्य से छुड़ा सकते हैं।

याद करें :

भजन 77 : 14 अद्भुत काम करने वाला ईश्वर तू ही है, तूने देश-देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है।

प्रश्न :

1. मिस्र में आई विपत्तियों में पहली दो कौन सी थी?
2. फिरौन ने क्या सुझाव दिए?
3. मिस्र की गुलामी में रहने वाले इस्राएलियों में और हममें क्या समानता है?
4. आज मनुष्यों को किसने अपना गुलाम बनाकर रखा है?

☆☆☆☆

पाठ–14

मिस्र से छुटकारा

निर्गमन 12

हमने सीखा कि परमेश्वर ने फिरौन से क्या किया जब वह इस्राएलियों को मिस्र से जाने नहीं दे रहा था। एक के बाद एक नौ विपत्तियाँ उस पर आईं, परन्तु जैसे ही उसे छुटकारा मिलता, वह अपने हृदय को कठोर कर लेता था और लोगों को जाने नहीं देता था। अंत में परमेश्वर ने दसवीं विपत्ति भेजी।

पाठ :

परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''एक और विपत्ति मैं फिरौन पर डालूँगा तब फिरौन तुम्हें जाने देगा, और वह तुम्हें निकाल देगा।'' परमेश्वर ने मूसा को बताया कि वे क्या करने वाले हैं, और किस प्रकार इस्राएली उस विपत्ति से बच सकते हैं। परमेश्वर ने कहा, ''आधी रात को, नाश करने वाला दूत मिस्र देश में से निकलेगा, और हर एक परिवार का पहलौठा मर जाएगा। इस विपत्ति से बचने के लिए इस्राएली लोग अपने-अपने परिवार के लिए एक-एक मेम्ना लें। मेम्ना एक वर्ष का हो, वह नर हो और उसमें कोई दोष न हो, उसे महीने के दसवें दिन लेना और चौदहवें दिन तक रखे रहना। फिर संध्या को उसको मारकर उसका खून अपने घर के दरवाजे के अलंगों और चौखट पर छिड़कना। नाश करने वाला दूत खून को देखकर उस घर को छोड़ कर आगे निकल जाएगा।'' इस प्रकार बलि किए जाने वाले मेम्ने का पर्व ''फसह'' कहलाया। सभी इस्राएलियों ने मूसा की आज्ञा का पालन किया। यह पहला फसह था।

आधी रात को नाश करनेवाला दूत, उस देश से होकर गुज़रा, परन्तु जिन घरों पर खून लगा था, उन्हें छोड़ कर आगे बढ़ गया। उस रात मिस्रियों के घरों में बड़ा हाहाकार मचा, परन्तु इस्राएलियों के लिए यह आनंद और महान छुटकारे की रात थी। फिरौन और मिस्रियों ने उन्हें शीघ्रता से निकाल दिया, और उन्होंने जो चाँदी, सोना और वस्त्र माँगे,

वह सब भी दे दिया। इस्राएली अपना सब कुछ लेकर एक बड़ी सेना की तरह मिस्र से निकल गए।

जब तक वे लाल समुद्र के तट पर पहुँचे, फिरौन का मन बदल गया और उसने अपनी सेना लेकर उनको वापस लाने के लिए उनका पीछा किया। इस्राएली अत्यंत डर गए क्योंकि उनके आगे लाल समुद्र और पीछे फिरौन की सेना थी, और बचने का कोई रास्ता नहीं था। इस संकट के समय परमेश्वर ने उनकी दोहाई का उत्तर दिया। परमेश्वर की आज्ञानुसार मूसा ने अपनी लाठी उठाकर समुद्र के ऊपर बढ़ाई और समुद्र दो भागों में बँट कर सूखी भूमि दिखाई दी, और इस्राएली सुरक्षित पार चले गए। परन्तु जब फिरौन की सेना ने उनका पीछा किया, तब समुद्र का जल फिर पहले जैसा हो गया और फिरौन की सेना समुद्र में नाश हो गई।

लागू करना :

हृदय को कठोर करना परमेश्वर के न्याय को लाता है। नाश करनेवाले दूत से इस्राएलियों के पहलौठों का छुटकारा मेम्ने के खून के द्वारा हुआ। उसी प्रकार, प्रभु यीशु मसीह के लोहू के द्वारा हम परमेश्वर के न्याय से बच सकते हैं। वही परमेश्वर का मेम्ना है। बड़े संकट के समय परमेश्वर हमारे बचाव के लिए मार्ग निकालते हैं।

याद करें :

भजन संहिता 107:6 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उनको सकेती से छुड़ाया।

प्रश्न :

1. आखिरी विपत्ति कौन सी थी?
2. परमेश्वर के लोगों को इस विपत्ति से कैसे छुटकारा प्राप्त हुआ?
3. इस विशेष पर्व को क्या नाम दिया गया?
4. मेम्ने का बलिदान हमें क्या सिखाता है?
5. परमेश्वर के विरुद्ध हृदय को कठोर करने का क्या परिणाम होगा?

☆☆☆☆

पाठ–15

चट्टान से पानी

निर्गमन 17:1-7 गिनती 20:1-13

इस्राएली लोग लाल समुद्र से आगे एक विशाल मरुभूमि से होकर उस बादल की अगुआई में चले, जिसमें परमेश्वर की उपस्थिति थी। अपने लोगों को मिस्र से निकालने के लिए जिस प्रकार परमेश्वर ने अद्‌भुत कार्य किए, उसी प्रकार जंगल में भी उन्हें सुरक्षित रखा।

पाठ :

मरुभूमि में जीवन बहुत कठिन होता है। दिन में बहुत गर्मी और रात को बहुत ठंड होती है। वर्षा नहीं होती और पानी व हमारे पेड़ भी नहीं होते। जब वे रपीदीम में आए तब उन्हें पानी नहीं मिला। तुरंत ही इस्राएली कुड़कुड़ाने लगे। उन्होंने मूसा से कहा, ''हम पानी के बगैर कैसे जी सकने हैं? हमें पीने के लिए पानी दो!'' कुछ ही समय पहले परमेश्वर ने उनकी सभी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए आश्चर्यकर्म किए थे, परन्तु अब वे सब कुछ भूल गए।

लोगों का गुस्सा देखकर मूसा ने परमेश्वर को दोहाई दी, ''इन लोगों से मैं क्या करूँ, ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं।'' परमेश्वर ने मूसा की विनती सुनी और कहा, ''इस्राएल के कुछ वृद्ध लोगों को साथ लो और अपनी छड़ी लो, और होरेब पहाड़ पर जाकर उसकी चट्टान पर छड़ी से मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा, जिससे ये लोग पीएं।''

मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और चट्टान पर मारा। उसमें से इतना अधिक पानी निकला, कि मनुष्यों व पशुओं के लिए काफी था। मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, जिसका अर्थ है ''परीक्षा''।

बहुत वर्षों के बाद जब जंगल की यात्रा समाप्त होने वाली थी, तब वे कादेश आए और वहाँ रहने लगे। फिर से, वहाँ पानी नहीं मिला और

फिर से लोगों ने शिकायत की। परमेश्वर के द्वारा आश्चर्यजनक रूप से उनकी आवश्यकतापूर्ति करने के बावजूद भी वे पहले ही तरह मूसा से झगड़ने लगे। यद्यपि मूसा नम्र और सहनशील पुरुष था, फिर भी इस अवसर पर वह स्वयं पर काबू न रख सका, और वह क्रोध में जल रहा था। मूसा और हारून परमेश्वर की उपस्थिति में गए और मुँह के बल गिरे, और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''अपनी लाठी ले, और अपने भाई हारून समेत मंडली को इकट्ठा करके उनके देखते चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी, इस प्रकार तू चट्टान में से उनके लिए जल निकालकर मंडली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।'' मूसा और हारून के साथ सभी इस्राएली चट्टान के पास इकट्ठा हो गए। मूसा अभी भी गुस्से में था। परमेश्वर की आज्ञानुसार चट्टान से बातें करने के बजाय उसने लाठी से चट्टान पर एक नहीं, दो बार मारा। चट्टान में से पानी फूट निकला और लोगों ने पीया। परन्तु परमेश्वर मूसा से अप्रसन्न हो गए क्योंकि मूसा ने चट्टान से बातें करने के बजाय उसे मारा। इस अनाज्ञाकारिता का कारण क्रोध था! इसलिए परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह वायदे के देश में प्रवेश नहीं कर पाएगा।

लागू करना :

कुड़कुड़ाना ऐसा पाप है, जो परमेश्वर का दण्ड लाएगा, क्रोध करना भी वैसा ही है। हमें हमेशा परमेश्वर पर विश्वास करते हुए, आभारी होना चाहिए। चट्टान मसीह की तस्वीर है। जिस प्रकार चट्टान को मारा गया, उसी प्रकार हमारे प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ाया गया, एक बार, हमेशा के लिए ताकि हमें जीवन का जल प्राप्त हो।

याद करें :

भजन 18:2 यहोवा मेरी चट्टान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ाने वाला है।

प्रश्न :

1. रपीदीम में क्या गलत हुआ?
2. तब मूसा ने क्या किया?

3. चट्टान जिसे मारा गया, वह किस की तस्वीर है?
4. कादेश में, चट्टान से क्या करने के लिए परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी थी?
5. मूसा का पाप क्या था? उसको क्या सज़ा दी गई?

✯✯✯✯

पाठ–16

यरदन पार करना

यहोशू - अध्याय 4

हमने देखा कि किस प्रकार परमेश्वर ने जंगल में इस्राएलियों का मार्ग दर्शन किया। चालीस वर्षो तक उनकी यात्रा के दौरान परमेश्वर ने उन्हें रोशनी और छाया, भोजन और पानी उपलब्ध कराया। इस यात्रा के अंत में वे यरदन नदी के पास पहुँचे। तब तक मूसा और हारून की मृत्यु हो चुकी थी, क्योंकि उनको यरदन के पार उस देश में जाने की अनुमति नहीं थी, जिसका वायदा परमेश्वर ने इस्राएलियों से किया था। क्या आपको याद है कि ऐसा क्यों हुआ?

फिर परमेश्वर ने यहोशू से बातें की। यहोशू अनेक वर्षो तक मूसा के साथ रहा, यहाँ तक कि सीनै पर्वत पर भी। परमेश्वर ने यहोशू से अनेक प्रतिज्ञाएँ की और इस्राएलियों को यरदन के पार, वायदे के देश में ले जाने के लिए नियुक्त किया।

पाठ :

यरदरन के तट पर इस्राएली तीन दिन टिके रहे, उस दौरान यहोशू ने दो पुरुषों को उस देश का भेद लेने के लिए भेजा। उनकी सहायता राहाब नाम की एक स्त्री ने की, और भेदियों ने उसे वचन दिया कि वे उसे बचा लेंगे जब शहर नाश किया जाएगा। भेदिए अच्छी खबर लेकर आए, कि वहाँ के लोग अत्यंत भयभीत हैं।

परमेश्वर ने यहोशू को बताया कि उन्हें क्या करना होगा। सबसे पहले याजक लोगों को परमेश्वर के संदूक को लेकर यरदन नदी में जाना होगा। यरदन नदी में कटनी के समय बाढ़ सी स्थिति रहती है। फिर भी, परमेश्वर का संदूक उठाए याजकों के पाँव जैसे ही यरदन के जल में पड़े, वैसे ही ऊपर से बहता हुआ जल थम गया, और आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है, रुककर एक ढेर हो गया। और जो नीचे अराबा का ताल (मृत सागर) की ओर बह रहा था, वह पूरी

तरह से सूख गया, और प्रजा के लोग यरीहो के सामने पार उतर गए। याजक चलकर नदी के बीच में खड़े हो गए, और सब इस्राएली पार उतरते रहे। परमेश्वर ने यहोशू से यह भी कहा, कि प्रजा के बारह पुरुष प्रत्येक गोत्र में से एक पुरुष यरदन के बीच में जाकर जहाँ याजक खड़े थे, वहाँ से एक-एक पत्थर उठाकर यरदन के पार ले जाएँ, ताकि परमेश्वर ने उनके लिए जो किया उसके स्मरण के लिए वह खड़े किए जाएँ।

जैसे ही संदूक लिए याजक नदी से बाहर आए, और उनके पैर सूखी भूमि पर पड़े, वैसे ही यरदन का जल अपने स्थान पर वापस आ गया और बाढ़ की तरह बहने लगा। उस दिन लोगों ने जान लिया कि उनकी अगुआई के लिए परमेश्वर ने यहोशू को चुना है। उसके जीवन भर इस्राएली उसका भय मानते और उसका आदर करते रहे।

लागू करना :

परमेश्वर की वाचा का संदूक हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है। अपने लोगों को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ को इस घटना ने प्रमाणित किया। मसीह यीशु के साथ हम एक विजयी-जीवन में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर का संदूक उनके लिए मार्ग खोलने आगे गया और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए पीछे रहा। उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह सब बुराइयों से बचाने के लिए हमें आगे पीछे से घेर कर रखते हैं।

याद करें :

यशायाह 43:2 जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग-संग रहूँगा।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों ने 3 दिन के लिए कहाँ डेरे डाले?
2. जब वे यरदन नदी के किनारे पहुँचे, तब नदी की स्थिति क्या थी?
3. उन्होंने नदी कैसे पार की?
4. किस अवसर पर ठीक इसी प्रकार का आश्चर्यकर्म हुआ था?
5. बारह पत्थर किस बात को प्रदर्शित करते हैं?
6. परमेश्वर का संदूक किसकी तस्वीर है?

✯✯✯✯

पाठ–17

यरीहो पर विजय

यहोशू अध्याय 2 व 6

पिछले पाठ मे हमने सीखा कि कितने अद्‌भुत तरीके से परमेश्वर ने इस्राएलियों की यरदन पार तक अगुआई की। वे वायदे के देश, कनान पहुँच गए थे, और यरीहो की समतल भूमि, गिलगाल में डेरे डाले। यरीहो संसार का सबसे पुराना शहर माना जाता है। वह चारों ओर ऊँची दीवार से सुरक्षित किया गया है। यरीहो के लोग अत्यंत भयभीत थे, क्योंकि उन्होंने उन आश्चर्यकर्मों के बारे में सुना था, जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए किए थे।

पाठ :

यहोशू ने देश का भेद लेने के लिए दो भेदियों को भेजा। वे राहाब नाम की एक स्त्री के यहाँ जाकर रहे। राजा को भेदियों की खबर मिली; उसने तुरंत राहाब को संदेश भेजा, ''जो पुरुष तुम्हारे यहाँ आए हैं, उन्हें बाहर लाओ, क्योंकि वे भेदिए हैं।'' उस स्त्री ने उन दोनों पुरुषों को छिपा रखा था। उसने राजा को उत्तर भेजा, ''हाँ, वे पुरुष आए ज़रूर थे, परन्तु मैं नहीं जानती कि वे कहाँ से आए थे, और जब अंधेरा हुआ, और फाटक बंद होने लगे, तब वे निकल गए। मैं नहीं जानती कि वे किस तरफ गए। उनके पीछे शीघ्रता से जाओगे तो शायद उनको पकड़ सकोगे।'' परन्तु उस स्त्री ने उन पुरुषों को अपने घर की छत पर सनई की लकड़ियों के नीचे छिपा दिया था। ज्योंही उनको खोजने वाले फाटक से निकले, तुरंत ही फाटक बंद कर दिया गया। वह स्त्री छत पर गई, और उसने कहा, ''मैं जानती हूँ कि परमेश्वर ने यह देश तुम लोगों को दिया है। अब तुम लोग मुझ से यहोवा की शपथ खाओ, कि तुम मेरे परिवार पर दया करोगे, क्योंकि मैंने तुम पर दया की है। और इस बात की सच्ची चिन्हानी तुम मुझे दो कि तुम मेरे माता–पिता, भाई–बहनों और जो कुछ उनका है, सब को जीवित रहने दोगे।'' उन्होंने उससे कहा,

ऐसा ही होगा। अपने माता-पिता और भाई बहनों को अपने घर में रखो और अपनी खिड़की में एक लाल सूत की डोरी बाँध देना, जिस खिड़की से तुमने हमें नीचे उतारोगी, और यदि कोई तुम्हारे घर से बाहर निकलेगा, तो उसके खून का दोष उसी के सिर पर पड़ेगा और हम उत्तरदायी नहीं होंगे।'' राहाब ने उनकी बात के अनुसार ही किया। उसने उन भेदियों को रस्सी के सहारे खिड़की से नीचे शहर से बाहर उतार दिया, क्योंकि उसका घर शहरपनाह पर बना हुआ था। भेदियों ने आकर यहोशू से सारा वृत्तांत कह सुनाया।

यरीहो के निकट पहुँचकर यहोशू ने ऊपर देखा और उसने अपने सामने तलवार लेकर खड़े एक पुरुष को देखा। यहोशू ने उसके पास जाकर उससे पूछा, ''क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे शत्रुओं की ओर का?'' उसने उत्तर दिया ''मैं यहोवा परमेश्वर की सेना का प्रधान हूँ।'' यह दर्शन यहोशू को दिया गया, ताकि आने वाले युद्ध का सामना करने के लिए उसे प्रोत्साहन मिले।

अब यरीहो के सब फाटक इस्राएलियों के डर के कारण बंद थे। तब परमेश्वर ने यहोशू से कहा, ''मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूँ। सो तुम में जितने योद्धा हैं, नगर के चारों ओर एक बार घूम आएँ। छः दिन तक ऐसा ही किया करना। सात याजक सन्दूक के आगे आगे जुबली के सात नरसिंगे लिए हुए चलें। फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों तरफ सात चक्कर लगाना, और याजक भी नरसिंगे फूँकते चलें। सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें। तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी, और सब लोग अपने-अपने सामने चढ़ जाएँ।''

यहोशू ने परमेश्वर की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया। सातवें दिन परमेश्वर की आज्ञानुसार उन्होंने शहरपनाह के चारों ओर सात चक्कर लगाए। जब याजकों ने ज़ोर से नरसिंगे फूंके, तब लोगों ने बड़ी ही ध्वनि से जयजयकार किया और शहरपनाह गिर पड़ी। लोग अपने-अपने सामने चढ़ गए और नगर को ले लिया। कितनी अद्‌भुत रीति से परमेश्वर ने कार्य किया। यहोशू ने आज्ञा दी कि सब चाँदी, सोना, पीतल और लोहे के बरतन जो यरीहो में मिलें, वे सब परमेश्वर के भवन में लाए जाएँ।

बचा हुआ सब कुछ पूरी रीति से नाश किया जाए। यहोशू ने कहा, ''यह शहर शापित है, कोई मनुष्य इसमें से अपने लिए कुछ भी नहीं लेगा।''

यहोशू उस वायदे को नहीं भूला जो भेदियों ने राहाब से किया था। उसने उन दोनों को भेजकर राहाब और जो कुछ उसका था, सबको निकालकर शहर से बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। उसके पश्चात् शहर में सब मार डाले गए और शहर नाश किया गया।

लागू करना :

परमेश्वर उनका आदर करते हैं जो परमेश्वर का आदर करते हैं। यद्यपि राहाब एक अन्यजाति और पापिनी स्त्री थी, फिर भी उसने अपने जीवन को खतरे में डाला क्योंकि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर का भय माना। और परमेश्वर ने उसे इस्राएल में एक उत्तराधिकार दिया। यरीहो की शहरपनाह शैतान की ताकत की तरह है जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता और विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ से शहरपनाह गिराई गई, उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह शैतान की शक्ति को तोड़ देते हैं और अपने ऊपर विश्वास करने वालों को बचाते हैं।

याद करें :

भजन संहिता 18:29 क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूँ।

प्रश्न :

1. यरदन को पार करने के बाद इस्राएलियों ने कहाँ डेरे डाले?
2. यरीहो शहर में भेदिए कहाँ रहे?
3. राहाब ने भेदियों की किस प्रकार सहायता की?
4. भेदियों ने राहाब को क्या आश्वासन दिया?
5. यहोशू के सामने कौन प्रकट हुआ और क्यों हुआ?
6. उन्होंने यरीहो शहर को कैसे जीत लिया?

☆☆☆☆

पाठ–18

एली और उसका परिवार

1 शमूएल 2:12–36

हमने सीखा कि किस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से छुटकारा दिया और मूसा और हारून ने मरुभूमि में उनका मार्गदर्शन किया। परमेश्वर ने मूसा को एक मिलापवाला तम्बू बनाने की आज्ञा दी, ताकि इस्राएली वहाँ बलिदान चढ़ा सकें और परमेश्वर की आराधना कर सकें।

परमेश्वर ने मिलापवाले तंबू में सेवाकार्य के लिए लेवी के गोत्र को चुना और हारून और उसके पुत्रों को याजक पद के लिए चुना। वायदे के देश में पहुँचने के कुछ समय बाद, याजक पद पर एली था।

पाठ :

यह वह समय था जब परमेश्वर की ओर से कोई प्रकटीकरण या संदेश नहीं मिलता था। उस समय एली इस्राएल में याजक था। यद्यपि वह एक धर्मी पुरुष था और परमेश्वर के सम्मुख विश्वस्त भी था, परन्तु उसने अपने लड़कों को अनुशासन में नहीं रखा था। क्योंकि एली बूढ़ा हो गया था और उसको ठीक से दिखाई नहीं देता था, इसलिए उसके पुत्र इस्राएली लोगों के लाए हुए बलिदान चढ़ाते थे, परन्तु वे परमेश्वर के द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन नहीं करते थे। बलिदान के माँस में से वे अपने लिए सबसे अच्छा निकाल लेते थे, और जो बलिदान लाते थे वे उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे। इसलिए लोगों ने उन्हें तुच्छ जाना और वे बलिदान लेकर तम्बू में आने से कतराने लगे, और परमेश्वर का निरादर हो रहा था। सब कुछ जानते हुए भी एली अपने पुत्रों पर नियंत्रण नहीं कर सका।

उस समय इस्राएलियों का पलिश्तियों के साथ युद्ध हो रहा था। इस्राएली अपने शत्रु पर विजय प्राप्त नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रहे थे। पश्चाताप करके परमेश्वर से प्रार्थना करने के बजाय एली के पुत्र होप्नी और पीनहास परमेश्वर के संदूक को

पवित्र स्थान से निकालकर युद्ध भूमि में ले गए। उन्होंने सोचा कि संदूक की उपस्थिति उन्हें विजय प्रदान करेगी। एली द्वार पर बैठा युद्ध का समाचार सुनने का इंतजार कर रहा था, परन्तु जो संदेश लेकर आया था, उसने कहा कि उसके दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास मारे गए हैं, और पलिश्ती परमेश्वर का संदूक छीन ले गए हैं। इस भयंकर खबर को सुनकर एली अपनी कुर्सी पर से गिरा, उसकी गर्दन टूट गई और उसकी मृत्यु हो गई।

एली याजक की मृत्यु कितनी भयंकर थी! परमेश्वर की उपस्थिति में उसका कितना सम्मानजनक पद था परन्तु उसके पुत्रों ने उसे केवल दुख दिया। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा नहीं मानी और परमेश्वर के वचन को तुच्छ जाना। वे परमेश्वर के सेवाकार्य में शर्मिंदगी लाए। परमेश्वर का पूरा न्याय एक ही दिन में उन पर आ गया।

लागू करना :

बच्चों, आपको भी परमेश्वर के और अपने माता-पिता के आज्ञाकारी होना चाहिए। क्या आप परमेश्वर को जानते हो, और उसके वचन की आज्ञा मानते हो? आपके माता-पिता का परमेश्वर पर विश्वास करना, आपको नहीं बचाएगा। आपको स्वयं प्रभु यीशु के पास आकर अपना जीवन प्रभु को समर्पित करना होगा और प्रभु की आज्ञा माननी होगी। परमेश्वर पाप का दण्ड अवश्य देंगे, चाहे वह अगुआ हो, प्रचारक हो या अन्य कोई भी क्यों न हो। तथापि, जो भी पश्चाताप करता है और पाप को छोड़ देता है, उसे क्षमा प्राप्त होगी।

याद करें :

इफिसियों 6:1 हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो।

प्रश्न :

1. एली के पुत्रों के क्या नाम थे?
2. उनका पाप क्या था?
3. एली और उसके पुत्रों की मृत्यु कैसे हुई?
4. इस घटना से आपने क्या पाठ सीखा?

✯✯✯✯

पाठ–19

राजा शाऊल

1 शमूएल 15

हमने देखा कि किस प्रकार परमेश्वर की अगुआई और मार्गदर्शन में इस्राएलियों ने जंगल की यात्रा तय की। कनान में आकर बसने के बाद परमेश्वर ने उन पर शासन करने के लिए उन ही लोगों में से गिदोन और शिमशोन जैसे न्यायी लोगों को ठहराया। शमूएल उनका आखिरी न्यायी था। शमूएल के समय में इस्राएलियों के चारों ओर रहने वाले राज्यों में राजा राज करते थे, तब उन्होंने भी अपने लिए राजा की माँग की।

उन्होंने शमूएल से विनती की, कि उनके ऊपर शासन करने के लिए एक राजा को नियुक्त करे। इस बात से शमूएल अप्रसन्न था। वह जानता था कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना में राजा की नियुक्ति नहीं थी, क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनका राजा था, और न्यायी लोग परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते थे। इसलिए शमूएल ने इसके विषय में परमेश्वर से पूछा।

पाठ :

परमेश्वर ने शमूएल से कहा, ''लोगों ने तेरा नहीं मेरा ही तिरस्कार किया है। उन्हें राजा दे दो, परन्तु यह चेतावनी भी दे देना कि यह उनके लिए अच्छा नहीं होगा।'' शमूएल इस विषय में बहुत दुखी था, परन्तु उसने इस्राएलियों की इच्छानुसार बिन्यामीन गोत्र के शाऊल को इस्राएल का पहला राजा होने के लिए नियुक्त किया। लोग अत्यंत प्रसन्न थे और वे चिल्लाए, ''राजा चिरंजीव रहे!''

शाऊल ने अच्छी शुरुआत की। उसने अम्मोनियों और अन्य शत्रुओं पर इस्राएलियों को विजय दिलाई। परन्तु उसने परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को नहीं माना। एक बार उसने बलिदान चढ़ाया, जो केवल एक याजक

को ही करना चाहिए था। और एक बार परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी कि सारे अमालेकियों को उनके पशुओं समेत नाश करो, परन्तु शाऊल ने उस आज्ञा का पालन भी पूर्ण रूप से नहीं किया। उसने उनके राजा अगाग को और अच्छे पशुओं को भी जीवित छोड़ा। जब शमूएल शाऊल के पास आया, तो शाऊल ने कहा, ''तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले, मैंने यहोवा की आज्ञा पूरी की है।'' शमूएल ने पूछा, ''फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना और गाय-बैलों का यह बंबाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है?'' शाऊल ने उत्तर दिया, ''प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि करने को छोड़ दिया है, और बाकी सब को तो हम ने सत्यानाश कर दिया है।'' शमूएल ने उत्तर दिया, ''तूने ऐसा क्यों किया? क्या यहोवा होमबलियों और मेलबिलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।''

शाऊल ने मान लिया कि उसने पाप किया, परन्तु उसका मन परिवर्तन नहीं हुआ था। परमेश्वर ने दूसरे राजा का अभिषेक करने के लिए शमूएल को भेजा।

लागू करना :

शाऊल को परमेश्वर ने बुलाया और उसे बहुत आशीष दी, परन्तु वह अपनी इच्छा के अनुसार चला। हम जिन वस्तुओं का आनंद उठाते हैं, वह हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्राप्त होता है। हमें धन्यवादी और आज्ञाकारी होना चाहिए, घमंडी और स्वार्थी नहीं। अधूरी आज्ञाकारिता, आज्ञा मानना नहीं होता। जब हम अपनी इच्छा के अनुसार जीते हैं तो हो सकता है कि परमेश्वर हम पर से अपनी आशीषें हटा लें।

याद करें :

1 शमूएल 15:22 सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

प्रश्न :

1. राजाओं से पहले इस्राएल पर कौन शासन करते थे?
2. इस्राएलियों ने राजा की माँग क्यों की?
3. इस्राएल का पहला राजा कौन था?
4. शाऊल का पाप क्या था?
5. उसे क्या सज़ा मिली?

☆☆☆☆

पाठ–20

दाऊद का अभिषेक

1 शमूएल 16

पिछले पाठ में हमने इस्राएल के पहले राजा के विषय में सीखा। उसका नाम क्या था? उसके पहले इस्राएल का नेतृत्व किसने किया? उन्होंने राजा की माँग क्यों की? यद्यपि पहले शाऊल ने राज्य किया परंतु परमेश्वर ने राज्य की स्थापना करने के लिए दाऊद को चुना। परमेश्वर ने शाऊल को हटा दिया क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी।

पाठ :

अमालेकियों के साथ हुए युद्ध में शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। इसी कारण उसने आशीषें खो दीं और अपनी राजगद्दी भी। शाऊल पछताया तो था, परन्तु उसने अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया और न परमेश्वर की तरफ मुड़ा। तब परमेश्वर ने शमूएल से कहा कि बैतलहेम जाकर यिशै के पुत्रों में से एक का अगला राजा होने के लिए अभिषेक कर। शमूएल को शाऊल का भय था, परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा कि वहाँ जाओ और एक यज्ञ करो और उसमें यिशै और उसके पुत्रों को न्यौता देना। शमूएल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। वह बैतलहेम गया, जहाँ शहर के पुरनियों ने बड़े भय और आदर से उसका स्वागत किया। जब यिशै और उसके पुत्र आए, तब शमूएल ने यिशै के पुत्रों को अपने पास बुलाया। एलीआब जो सबसे बड़ा था, बहुत योग्य दिखता था, और शमूएल ने उसका अभिषेक करना चाहा, परन्तु परमेश्वर के आत्मा ने यह कहकर उसे रोक दिया, ''मैंने उसे नहीं चुना।'' अगले छः पुत्र भी एक-एक करके शमूएल के सामने आए, परन्तु परमेश्वर ने उनमें से किसी को नहीं चुना।

शमूएल ने यिशै से पूछा कि क्या तेरे सारे पुत्र आ गए? तब यिशै ने अपने सबसे छोटे बेटे को बुलवाया जो भेड़ें चरा रहा था। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आंखें सुंदर और रूप सुडौल था।

परमेश्वर ने उसके रूप को नहीं देखा जैसे शमूएल ने देखा। परमेश्वर ने दाऊद के हृदय को देखा और उसे राजा होने के लिए चुन लिया। शमूएल ने तेल लेकर उसका अभिषेक किया, और उस दिन से परमेश्वर का आत्मा दाऊद के साथ रहा।

उस समय परमेश्वर का आत्मा शाऊल पर से उठ गया था और उसमें एक दुष्ट आत्मा थी। शाऊल के सेवकों ने उसे सलाह दी कि उस दुष्टात्मा को निकालने के लिए किसी अच्छे वीणा बजाने वाले को बुलाया जाए। जब शाऊल ने मान लिया, तब उसके एक सेवक ने कहा कि यिशै का पुत्र दाऊद बहुत अच्छी तरह वीणा बजाता है। शाऊल ने दाऊद को बुलवाया और यिशै ने उसे राजमहल में भेज दिया। जब भी शाऊल दुष्टात्मा के कारण परेशान होता, तब दाऊद वीणा बजाता था और दुष्टात्मा उस पर से हट जाता था। शाऊल दाऊद से बहुत प्रेम करता था, इसलिए उसने यिशै से कहा कि दाऊद को राजमहल में रहने दे। यह दाऊद के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। शाऊल के साथ रहने से दाऊद सीख रहा था कि एक राजा को किस प्रकार जीवन बिताना और कार्य करना चाहिए।

लागू करना :

परमेश्वर हम में से हर एक के हृदय को देखते हैं। वह चाहते हैं कि सब लोग उनकी सेवा में विश्वस्त हों। फिर परमेश्वर हर एक को उपयुक्त स्थान पर रखते हैं।

याद करें :

1 शमूएल 16:7 यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

प्रश्न :

1. शाऊल को राज-पद से क्यों हटाया गया?
2. दाऊद का अभिषेक करने के लिए शमूएल कैसे आया?
3. दाऊद कहाँ था, जब उसे बुलवाया गया था?
4. दाऊद राजमहल में रहने क्यों आया?

✯✯✯✯

पाठ–21

सुलैमान की बुद्धिमत्ता

1 राजा 3:4–28

हमने इस्राएल के दो राजाओं के बारे में सीखा। क्या आपको याद है कि पहला राजा कौन था? उसके पश्चात् परमेश्वर ने दाऊद को चुना, जो चालीस वर्षों तक इस्राएल का राजा बना रहा। दाऊद के बाद उसका पुत्र सुलैमान राजा बना। अक्सर उसे **ज्ञानी सुलैमान** कहा जाता है। आज हम देखेंगे कि उसे वह उपाधि कैसे मिली।

पाठ :

दाऊद का पुत्र सुलैमान कम उम्र में ही राजा बन गया। वह भी अपने पिता की तरह परमेश्वर से प्रेम करता था। एक रात परमेश्वर ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर कहा, ''जो कुछ तू चाहे वह माँग।'' सुलैमान ने पहले उसके पिता को, फिर स्वयं उसे राजपद देने के लिए, परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर उसने एक अच्छे और बुरे को समझने वाला हृदय माँगा ताकि वह इतने महान राष्ट्र का सही न्याय करते हुए राज्य कर सके।

परमेश्वर सुलैमान की विनती से बहुत प्रसन्न हुए। परमेश्वर ने सुलैमान को इतनी बुद्धि और विवेक से भरा मन दिया कि सुलैमान से पहले और बाद में इतना बुद्धिमान कोई नहीं हुआ।

उसके साथ परमेश्वर ने उसे आदर और समृद्धि से भी भरपूर किया जो उसने नहीं माँगा था।

एक दिन दो स्त्रियाँ एक कठिन मुकदमा लेकर उसके पास आईं। दोनों स्त्रियों के हाथ में नवजात शिशु थे, परन्तु उसमें से एक मरा हुआ था। एक स्त्री ने राजा से कहा, ''हम दोनों एक ही घर में रहते हैं। रात को इस स्त्री का बच्चा मर गया और इसने अपने मरे बच्चे को मेरे पास रखकर मेरा जीवित बच्चा ले लिया। उसके हाथ में जो बालक है वह

मेरा है। और मेरे माँगने पर भी वह नहीं देती। हे राजा, मेरा बच्चा मुझे दिला दीजिए!'' इस पर दूसरी स्त्री ने कहा, ''नहीं! जीवित बालक मेरा है, और मृत बालक उसका है।''

कौन बता सकता था कि कौन सी स्त्री सच बोल रही थी? यह बहुत कठिन प्रश्न था, परन्तु सुलैमान को शीघ्र ही उसका उत्तर मिल गया। उसने कहा, ''तुम लोग जीवित बालक के लिए झगड़ा कर रहे हो। एक तलवार लाओ और जीवित बालक के दो टुकड़े करो और आधा-आधा दोनों स्त्रियों को दे दो।'' तभी जीवित बच्चे की माँ रोते हुए बोली, ''नहीं हे राजा, उसे मत मारो। उसे उसी स्त्री को दे दो, चाहे वह मुझे न मिले, तौभी उसे जीवित रहने दो।'' परन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, ''वह न तो तेरा हो, न मेरा, उसके दो टुकड़े किये जाएँ।'' तब राजा समझ गया कि जीवित बालक की असली माँ कौन है। वही उसकी माँ है जिसने उस बालक को मारने नहीं दिया। राजा ने उसका बच्चा उसको दे दिया और वह संतुष्ट होकर चली गई।

इस प्रकार सुलैमान ने ईश्वरीय बुद्धि दिखाई। यह उसके लिए परमेश्वर का वरदान था।

लागू करना :

परमेश्वर ने वायदा किया है कि वह अपने बच्चों को बुद्धि देंगे, यदि वे माँगेंगे। (याकूब 1:5)। आपको स्कूल की पढ़ाई में कुछ विषय कठिन लगते होंगे। उस विषय को समझने के लिए आप अवश्य परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।

यदि हम भी सुलैमान की तरह परमेश्वर को पसंद आने वाले दान माँगेंगे, तो हमने जो माँगा है, उससे अधिक परमेश्वर हमें देंगे, और हमें दूसरों के लिए आशीष का कारण बनाएँगे।

याद करें :

नीतिवचन 2:6 क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है, ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं।

प्रश्न :

1. सुलैमान को कौन सी उपाधि दी गई थी?
2. सुलैमान को अपना ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ था?
3. दो स्त्रियाँ किस बात पर झगड़ा कर रही थीं?
4. सुलैमान ने असली माँ का पता कैसे लगाया?
5. हमें सच्चा ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है?

✯✯✯✯

पाठ–22

एलिय्याह का स्वर्गारोहण

2 राजा 2

पुराने नियम में, परमेश्वर अपना वचन भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा देते थे। परमेश्वर के वचन में हम अनेक भविष्यद्वक्ताओं के बारे में पढ़ते हैं। उनमें सबसे महान था—एलिय्याह।

पाठ :

अपने वचनों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा एलिय्याह ने इस्राएलियों पर परमेश्वर की सामर्थ प्रकट की। उसके जीवन के अंतिम समयों में परमेश्वर ने उसे साथ रहने के लिए एक शिष्य दिया। वह एलीशा था, जो परछाई की तरह एलिय्याह के साथ रहा करता था। अंततः बहुत विशेष रीति से परमेश्वर ने एलिय्याह को संसार से उठा लिया। अक्सर लोग संसार छोड़कर कैसे जाते हैं? क्या मरने के द्वारा नहीं? आत्मा चली जाती है और शरीर रह जाता है। परन्तु परमेश्वर ने एलिय्याह को जीवित शरीर में ही स्वर्ग पर उठा लिया।

जब जाने का समय निकट आया, जब एलिय्याह और एलीशा एक साथ गिलगाल से बेतेल को गए। एलिय्याह ने अपने मित्र से बेतेल में रुकने को कहा, क्योंकि वह आगे जा रहा था। परन्तु एलीशा ने साथ रहने की ज़िद की। वे जानते थे कि उस दिन ही परमेश्वर एलिय्याह को उठा लेने वाले थे। वे एक साथ यरीहो को गए और फिर यरदन तक। वहाँ एलिय्याह ने अपनी चादर से यरदन के जल पर मारा। जल दो भाग हो गया, और वे पैदल पार चले गए।

एलिय्याह ने कहा, ''इससे पहले कि मैं चला जाऊँ, जो कुछ तू चाहे वह माँग ले।'' एलीशा ने कहा, ''तुझमें जो आत्मा है, उसका दुगना भाग मुझे मिल जाए।''

एलिय्याह ने कहा, ''तूने कठिन बात माँगी है, फिर भी मेरे उठाए जाते समय यदि तू मुझे देख ले, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा।''

जब वे चलते जा रहे थे, तब अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उनको अलग अलग किया, और एलिय्याह एक बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया, और एलीशा ने वह देख लिया। उसने अपने स्वामी और साथी के जाने के दुख में अपने कपड़े फाड़े। फिर उसने एलिय्याह के ऊपर से गिरी चादर को उठा लिया और यरदन नदी के तट पर पहुँचा। जिस प्रकार एलिय्याह ने किया था, उसी प्रकार एलिय्याह के परमेश्वर को पुकारते हुए एलीशा ने नदी पर मारा और वह दो भाग हो गया कि वह पार जा सके।

अपने मार्ग पर जाते हुए एलीशा यरीहो पहुँचा, जहाँ उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ से कड़वे पानी को ठीक कर दिया। बेतेल के रास्ते में उसके श्राप के कारण दो रीछनियों ने उन लड़कों को मार डाला जिन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया था। परमेश्वर उन्हें अवश्य दण्ड देते हैं, जो उसके दासों का मज़ाक उड़ाते हैं।

लागू करना :

यह अद्भुत बात थी कि एलिय्याह अपने जीवित शरीर में ही स्वर्ग पर उठा लिया गया, बिल्कुल वैसे, जैसे हनोक उठा लिया गया था। जब प्रभु यीशु दोबारा आएँगे, तब जो मसीह में मरे होंगे, वे पहले जी उठेंगे, और जो विश्वासी जीवित होंगे, वे भी प्रभु के पास उठा लिए जाएँगे। हमें उस दिन के लिए तैयारी के साथ इंतज़ार करना चाहिए।

याद करें :

1 थिस्सलुनीकियों 4:17 तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिले।

प्रश्न :

1. एलीशा, एलिय्याह के पीछे-पीछे क्यों चला?
2. उन्होंने यरदन नदी कैसे पार की?
3. परमेश्वर ने एलिय्याह को एलीशा से किस प्रकार अलग किया?
4. परमेश्वर एलिय्याह को किस प्रकार स्वर्ग ले गए?
5. एलीशा का एक आश्चर्यकर्म बताओ।

☆☆☆☆

पाठ–23

शूनेमिन स्त्री का पुत्र

2 राजा 4

हमने देखा कि कैसे एलीशा ने अपना कार्य आरंभ किया। आज हम उसके एक आश्चर्यकर्म के बारे में सीखेंगे।

इस्राएल देश में परमेश्वर की सेवा करते हुए एलीशा जगह–जगह गया। एक दिन वह शूनेम नाम की जगह पहुँचा तो एक अमीर स्त्री ने उसे अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसके पश्चात् जब भी वह उस रास्ते से जाता, तो भोजन के लिए उस घर में जाता था।

उस स्त्री और उसके पति ने देखा कि एलीशा परमेश्वर का भक्त है, इसलिए वे उसके ठहरने के लिए एक कमरा बनवा कर उसका आदर करना चाहते थे। एक दिन कमरे में आराम करते हुए एलीशा ने उस स्त्री को बुलवाया और उससे पूछा कि तू जो हमारा ध्यान रखती है, तेरी इस दया के बदले तेरे लिए क्या किया जाए? उसने कुछ नहीं माँगा, परन्तु सेवक गेहजी ने एलीशा को याद दिलाया कि वह निस्संतान है। एलीशा ने वादा किया कि एक साल में उसके पास पुत्र होगा। ऐसा ही हुआ। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो माता–पिता के आनंद का कारण बन गया।

एक दिन वह लड़का अचानक बीमार हो गया, जब वह खेत में अपने पिता और मजदूरों के साथ था। उसके पिता ने एक सेवक के साथ उसे उसकी माता के पास भेज दिया। वह दोपहर तक उसकी सेवा करती रही परंतु वह मर गया। उस स्त्री ने लड़के को भविष्यद्वक्ता के बिस्तर पर लिटा कर द्वार बंद कर दिया। अपने पति को पुत्र की मृत्यु के बारे में बताए बिना ही उसने कहा कि परमेश्वर के भक्त के पास जाने के लिए एक सेवक और एक गदही तुरंत भेज दे। वह कर्मेल पर्वत पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुँची और व्याकुल होकर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

जब एलीशा को लड़के की मृत्यु का पता चला, तब उसने गेहजी से कहा, ''अपनी कमर बाँध, और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा, मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुँह पर रख देना।'' गेहजी चला गया, परन्तु उस स्त्री ने एलीशा के बगैर जाना नहीं चाहा। अतः एलीशा उसके साथ गया। गेहजी ने घर पहुँचकर उस छड़ी को लड़के के मुँह पर रखा, परन्तु कुछ नहीं हुआ। उसने वापस जाकर एलीशा से कहा, ''लड़का नहीं जागा।'' एलीशा ने कमरे में आकर लड़के को अपने पलंग पर पड़े देखा। उसने सबको कमरे से बाहर कर दिया, किवाड़ बंद करके परमेश्वर से प्रार्थना की। तब वह चढ़कर लड़के पर इस तरह लेट गया कि अपना मुँह लड़के के मुँह पर, और अपनी आँखें उसकी आँखों से, और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिए और वह लड़के पसर गया, और लड़के की देह गर्म होने लगी। एलीशा उठकर इधर-उधर टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया। तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आँखें खोलीं। एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा कि लड़के की माता को बुला ले। जब वह आई, तब उसने ''अपने बेटे को उठा ले।'' वह भीतर आई और एलीशा के पाँवों पर गिरकर, भूमि तक झुककर दण्डवत किया। फिर अपने बेटे को उठाकर चली गई।

लागू करना :

परमेश्वर उन लोगों से प्रेम करते हैं, जो परमेश्वर के सेवकों से प्रेम करते हैं। परमेश्वर उनका आदर करते हैं जो परमेश्वर के सेवकों की परवाह करते, और उनका ध्यान रखते हैं। लड़के की मृत्यु होने पर वह परमेश्वर के भक्त के पास सहायता के लिए गई। जब हमारे ऊपर विपत्ति आती है, तब हमें केवल परमेश्वर के पास जाना चाहिए। वह अपने लोगों की सहायता अवश्य करते हैं।

भविष्यद्वक्ता मृत बालक के साथ समानता में हो गया और वह लड़का जीवित हो गया। उसी प्रकार हमारा प्रभु यीशु हमारी समानता में हो गए, और हम जो पाप और अधर्म में मरे हुए थे, अब मसीह में जीवित हैं।

याद करें :

यूहन्ना 11:25 यीशु ने उससे कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।''

प्रश्न :

1. शूनेमिन स्त्री ने एलीशा के साथ कैसा व्यवहार किया?
2. उस स्त्री ने कौन सी आशीष प्राप्त की?
3. बालक की मृत्यु होने पर उस स्त्री ने क्या किया?
4. एलीशा ने लड़के को कैसे जिलाया?
5. इस पाठ से हम क्या सीख सकते हैं?

✯✯✯✯

पाठ–24

नामान

2 राजा 5:1–19

पिछले पाठ में हमने उसे महान आश्चर्यकर्म के विषय में पढ़ा, जो परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता एलीशा ने किया। आज हम देखेंगे कि उसने एक कोढ़ी को कैसे रोगमुक्त किया।

पाठ :

इस्राएल का एक पड़ोसी देश था अराम और ये दोनों देश आपस में युद्ध करते थे। अराम की सेना का सेनापति नामान था। वह शूरवीर था, और अपने राजा की दृष्टि में प्रतिष्ठित था, परन्तु वह एक कोढ़ी था।

उसके घर में एक इस्राएली लड़की थी। हम उसका नाम नहीं जानते, पर वह इस्राएल के परमेश्वर की सामर्थ्य को जानती थी। अरामी इस लड़की को इस्राएल से पकड़कर लाए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी। यद्यपि वह विदेश में एक गुलाम थी, फिर भी वह अपना कार्य अच्छी तरह करती थी। एक दिन उसने अपनी मालकिन से कहा, ''यदि मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यद्वक्ता से मिलता, तो उसका कोढ़ ठीक हो जाता।'' उसकी कही बात नामान तक पहुँचाई गई, और नामान ने राजा को बता दी। अराम के राजा ने तुरंत इस्राएल के राजा के नाम चिट्ठी लिखकर नामान के हाथ से भेजने का निर्णय लिया। भविष्यद्वक्ता को देने के लिए चाँदी, सोना और वस्त्र लेकर नामान चल पड़ा। इस्राएल के राजा ने पत्र पढ़कर अपने कपड़े फाड़े, और कहा, ''मैं कोढ़ कैसे ठीक कर सकता हूँ? अराम का राजा मुझ से झगड़े का कारण ढूँढ़ रहा है।''

जब एलीशा ने सुना कि राजा ने वस्त्र फाड़े हैं, तो उसने कहला भेजा, ''उसे मेरे पास आने दो, तब वह जान लेगा, कि इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है।'' नामान रथों समेत एलीशा के द्वार पर आ गया। एलीशा ने एक सेवक को भेजकर कहलवाया, ''तू जाकर यरदन में सात बार

डुबकी मार, तब तू शुद्ध हो जाएगा।'' नामान क्रोधित होकर चला गया और उसने कहा, ''मैंने सोचा था कि भविष्यद्वक्ता बाहर मेरे पास आएगा और अपने परमेश्वर से प्रार्थना करके मुझे रोगमुक्त कर देगा। क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियाँ इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूँ?''

अत: वह अत्यंत क्रोधित होकर लौटकर चला गया।

जब नामान के सेवकों ने सुना, तो उसके पास जाकर कहने लगे, ''हे हमारे पिता, यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए।'' उनकी बात सुनकर नामान का मन बदला। उसने यरदन में जाकर एलीशा के कहे अनुसार सात बार डुबकी लगाई और उसका कोढ़ दूर हो गया। कितना अद्‌भुत!

तब नामान और उसके सेवक वापस एलीशा के पास गए और जो भेंट वो लाए थे, उसे लेने की विनती की। भविष्यद्वक्ता ने उत्तर दिया, ''यहोवा के जीवन की शपथ, मैं कुछ भेंट न लूँगा।'' कुशल से विदा हो। नामान वापस घर की ओर चला। अभी कुछ ही दूर गया था कि, एलीशा के सेवक गेहजी ने सोचा, कि मेरे स्वामी को नामान से भेंट ले लेना चाहिए था, अब मैं उसके पीछे दौड़कर उससे कुछ न कुछ ले लूँगा। गेहजी दौड़ कर नामान के पास पहुँचा। नामान उसे देखकर उससे मिलने रथ से उतरा। गेहजी ने उससे कहा, ''मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है, कि एप्रैम के पहाड़ी देश से भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से दो जवान मेरे यहाँ अभी आए हैं, इसलिए उनके लिए एक किक्कार चाँदी और दो जोड़े वस्त्र दे।'' नामान ने कहा, ''दो किक्कार लेने को प्रसन्न हो।'' तब उसने उससे बहुत विनती करके दो किक्कार चाँदी अलग थैलियों में बाँधकर, दो जोड़े वस्त्र समेत अपने दो सेवकों पर लाद दिया, और वे उन्हें लेकर उसके आगे-आगे चले। टीले के पास पहुँचने पर गेहजी ने उन वस्तुओं को लेकर घर में रख लिया और उन मनुष्यों को विदा किया। फिर वह अंदर जाकर अपने स्वामी के सामने खड़ा हो गया। एलीशा ने उससे पूछा, ''हे गेहजी तू कहाँ से आता है?'' उसने कहा, ''तेरा दास तो कहीं नहीं गया।'' एलीशा ने उससे कहा,

''जब वह पुरुष तुझ से मिलने रथ से उतरा, तब क्या मेरा आत्मा तेरे साथ नहीं था? क्या यह चाँदी और भेंट लेने का समय है? इस कारण नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा।'' तब वह हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर उसके सामने से चला गया।

लागू करना :

कोढ़ पाप की तस्वीर है। यह एक भयंकर आत्मिक रोग है। केवल परमेश्वर ही रोगमुक्त कर सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापों के लिए अपना प्राण दिया, ताकि हम पाप से और उसके दण्ड से बचाए जाएँ। नामान की पत्नी को इस्राएल के भविष्यद्वक्ता के बारे में बताकर उस छोटी लड़की ने बड़ा कार्य किया। आपको भी हमारे प्रिय प्रभु यीशु के बारे में अपने मित्रों और सहपाठियों को बताना चाहिए। एक साधारण सी आज्ञाकारिता से नामान स्वस्थ हो गया। उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह पर पूर्ण रूप से विश्वास करने के द्वारा पापी बच सकता है।

भविष्यद्वक्ता को धन-दौलत से कोई लगाव नहीं था, इसीलिए उसने नामान से भेंट नहीं ली। परन्तु उसके सेवक गेहजी ने धन-दौलत से प्रेम किया और उसे उसका दण्ड मिला। धन का लोभ सब बुराई की जड़ है।

याद करें :

1 यूहन्ना 1:7 परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु का लोहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है।

प्रश्न :

1. नामान कौन था? उसे क्या परेशानी थी?
2. नामान ने एलीशा के बारे में कैसे सुना?
3. एलीशा ने नामान से क्या करने को कहा?
4. नामान कैसे स्वस्थ हुआ?

✯✯✯✯

पाठ–25
जकर्याह और एलीशिबा
लूका 1:5–28; 57–68

हमने पुराने नियम के अनेक लोगों के बारे में सीखा। हमने सीखा कि किस प्रकार कुछ लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और आशीष प्राप्त किया। कुछ लोगों ने आज्ञा नहीं मानी और हानि उठाई। अब हम नए नियम के समय के कुछ लोगों के बारे में सीखेंगे। सबसे पहले हम एक याजक के बारे में सीखेंगे। परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया जिसे आने वाले उद्धारकर्ता के लिए मार्ग तैयार करना था।

पाठ :

यहूदिया में जकर्याह नामक एक याजक और उसकी पत्नी एलीशिबा रहते थे। वे बूढ़े और संतानहीन थे। वे परमेश्वर से प्रेम करते थे और ईमानदारी से उनकी सेवा करते थे।

एक दिन जब वह प्रभु के मंदिर में धूप जला रहा था, तब एक स्वर्गदूत ने उसे दर्शन देकर कहा, कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं को सुना, और उसे एक पुत्र देंगे। उन्हें अवश्य उसका नाम यूहन्ना रखना होगा। वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा और बहुत लोगों को परमेश्वर की ओर फेरेगा। जकर्याह ने स्वर्गदूत की बातों पर पूर्ण रूप से विश्वास नहीं किया। तब स्वर्गदूत जिब्राईल ने कहा कि इस वायदे के पूरा होने तक वह गूँगा रहेगा। जब वह मंदिर से बाहर आया तो वह बाहर खड़े लोगों से बातें नहीं कर पाया और तुरंत घर चला गया। परमेश्वर का वायदा सच हुआ और एलीशिबा ने एक पुत्र को जन्म दिया। सब लोगों ने उनके साथ आनंद मनाया।

यहूदियों की रीति के अनुसार आठवें दिन बालक का खतना करने सारे कुटुम्बी एकत्र हुए। एलीशिबा ने उनसे कहा कि स्वर्गदूत के वचन के अनुसार बालक का नाम यूहन्ना रखा जाना चाहिए, परन्तु लोगों ने कहा कि अपने पिता के नाम के अनुसार उसका नाम जकर्याह रखा

जाना चाहिए। तब उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा कि वह बालक का क्या नाम रखना चाहता है। वह बोल नहीं सकता था इसलिए उसने लिखने की पट्टी मँगाकर उस पर लिख दिया कि ''उसका नाम यूहन्ना है।'' तब उसकी जीभ तुरंत खुल गई, और प्रार्थना का उत्तर मिलने के कारण वह परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा।

सब लोग आश्चर्य कर रहे थे, कि यह बालक कैसा होगा। परमेश्वर ने उसे एक विशेष कार्य के लिए भेजा था। बालक बड़ा हुआ। वह जंगलों में रहता, ऊँट के रोम के वस्त्र पहनता और उस पर चमड़े का पटुका बाँधता था और टिड्डी और जंगली शहद खाता था। लोग उसके वचन सुनने के लिए आते थे। उसने उनसे कहा कि अपने पापों से पश्चाताप करो और मसीह के आगमन के लिए तैयार रहो। यूहन्ना लोगों को यरदन नदी में बपतिस्मा दिया करता था और वह ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला'' कहलाता था। उसने उतनी ही सामर्थ से प्रचार किया जितना एलिय्याह ने किया। उसने कहा कि, भविष्यद्वक्ताओं के वचन के अनुसार मसीहा आने वाला है। एक दिन यीशु नासरी वहाँ आए। यूहन्ना ने लोगों से कहा, ''यही है वह, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। वही परमेश्वर का मेम्ना है, जो संसार के पाप उठा, ले जाता है।'' यूहन्ना के सुनने वालों में से अनेक प्रभु यीशु के पीछे चलने लगे।

लागू करना :

यूहन्ना ने प्रभु यीशु का परिचय मसीहा के रूप में दिया। उसने कहा कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का मेम्ना है। उसका अर्थ था कि प्रभु यीशु पूरे संसार के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए जाएँगे। यूहन्ना की गवाही के कारण अनेकों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। क्या आप अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं?

याद करें :

लूका 1:68 प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका छुटकारा किया है।

प्रश्न :

1. यूहन्ना के माता–पिता कौन थे?
2. जकर्याह गूँगा क्यों हो गया था?
3. जकर्याह फिर से कब बोलने लगा?
4. यूहन्ना ने लोगों को क्या संदेश दिया?

☆☆☆☆

पाठ–26

प्रभु यीशु का बपतिस्मा

मत्ती 3:13–17

क्या आपने किसी का बपतिस्मा होते देखा है? जिन लोगों ने प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता माना है, वे प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं। आज हम सीखेंगे कि किस प्रकार प्रभु यीशु मसीह ने बपतिस्मा लिया, जो सब विश्वासियों के लिए एक नमूना है।

पाठ :

जंगल में प्रचार करते हुए यूहन्ना ने लोगों से कहा, कि जिस मसीहा को भेजने का वायदा परमेश्वर ने किया था, वह शीघ्र आनेवाला है, इसलिए अपने पापों से पश्चाताप करो। यूहन्ना यरदन नदी पर गया और जितने लोगों ने पश्चाताप किया और यह दिखाना चाहा कि उन्होंने यूहन्ना के संदेश पर विश्वास किया वे बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आए।

एक दिन प्रभु यीशु भी यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आए। यूहन्ना जानता था कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं और पापरहित हैं। इस कारण उसने प्रभु यीशु से कहा, ''मुझे तुझसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तुम मेरे पास आए हो?'' प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, ''अब तो ऐसा ही होने दो, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।'' तब यूहन्ना ने उसकी बात मान ली और उसको बपतिस्मा दिया। जैसे ही प्रभु यीशु पानी से ऊपर आए, कुछ असामान्य घटना हुई। स्वर्ग से परमेश्वर का आत्मा कबूतर के रूप में प्रभु यीशु पर उतरा और एक आकाशवाणी हुई कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।'' इस गवाही से बहुतों ने यह विश्वास किया कि यीशु ही वह मसीहा हैं, जिसका वायदा किया गया था। बहुत बड़ी भीड़ यूहन्ना का संदेश सुनने आई। उनमें से अनेकों ने पश्चाताप किया, अपने पापों से मन फिराया और बपतिस्मा लिया।

लागू करना :

प्रभु यीशु का बपतिस्मा हमारे लिए नमूना है। जो लोग पश्चाताप करके अपने पाप मान लेते हैं और प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हैं उन्हें बपतिस्मा लेकर आज्ञापालन करना चाहिए। जो प्रभु से प्रेम करते हैं, उन्हें प्रभु की आज्ञाओं का पालन भी करना चाहिए।

याद करें :

1 पतरस 2:21 मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो।

प्रश्न :

1. यूहन्ना जंगल में क्या प्रचार कर रहा था?
2. बपतिस्मा लेने से पहले लोगों ने क्या किया?
3. जब प्रभु यीशु पानी में से बाहर आए तब क्या हुआ?
4. प्रभु यीशु के बारे में परमेश्वर की गवाही क्या थी?

✯✯✯✯

पाठ–27

प्रभु यीशु और शैतान

मत्ती 4:1–11

पिछले पाठ में हमने प्रभु यीशु के बपतिस्मे के बारे में सीखा। वहां उपस्थित हज़ारों लोगों ने यूहन्ना की गवाही और आकाशवाणी सुनी। उसके पश्चात् प्रभु यीशु चालीस दिन जंगल में अकेले रहे।

पाठ :

पवित्र आत्मा प्रभु यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। प्रभु वहाँ चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहे।

जब प्रभु को भूख लगी, तो शैतान ने प्रभु की परीक्षा की। उसने कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि यह पत्थर रोटियाँ बन जाए। प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, ''लिखा है, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'' प्रभु यीशु ने स्वयं के लिए अपनी सामर्थ का प्रयोग नहीं किया, परन्तु दूसरों को भोजन देने के लिए किया।

फिर शैतान प्रभु को पवित्र नगर ले गया और मंदिर के सबसे ऊँचे स्थान पर खड़ा किया। और कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे अपने हाथ में उठा लेंगे, ताकि तुझे पत्थर से चोट न लगे।'' यहाँ शैतान परमेश्वर के वचन में भजन संहिता 91:11–12 में लिखी हुई बात कर रहा है। प्रभु यीशु ने भी वचन में लिखी हुई बात से उसे उत्तर दिया, ''यह भी लिखी है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।'' (व्यवस्थाविवरण 6:16)।

फिर से शैतान प्रभु को एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, ''यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।'' प्रभु यीशु ने उस से

कहा, "हे शैतान, दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" तब शैतान प्रभु के पास से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

लागू करना :

परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा प्रभु ने सब परीक्षाओं पर विजय प्राप्त की। प्रभु ने हमें दिखाया कि हमें किस प्रकार परीक्षाओं का सामना करना चाहिए। यदि हम सीख लें कि परमेश्वर का वचन क्या सिखाता है तो हम प्रभु यीशु की तरह शैतान को उत्तर दे सकेंगे। "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" (भजन संहिता 119:11)।

याद करें :

याकूब 4:7-8 "शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु ने कितने दिन उपवास किया?
2. किसने प्रभु यीशु की परीक्षा की? और कब की?
3. तीन परीक्षाएँ कौन सी थीं? प्रभु ने उसे कैसे उत्तर दिए?
4. परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
5. शैतान के जाने के बाद प्रभु यीशु की सेवा करने के लिए कौन आए?

✯✯✯✯

पाठ-28

सूबेदार के सेवक की चंगाई

लूका 7:2-10

आपने प्रभु यीशु के अनेक आश्चर्यकर्मों के बारे में सीखा है। उन्होंने बहुत रोगियों को चंगा किया। किसी को छूकर और किसी को अपने शब्दों से। आज हम सीखेंगे कि उन्होंने एक लड़के को देखे बगैर ही चंगा किया।

पाठ :

यह उस समय की घटना है, जब यहूदी लोगों का देश रोमी साम्राज्य का हिस्सा था। राज्यपाल और न्यायी सब रोमी थे और रोमी सिपाही सारे देश में फैले थे। एक दिन प्रभु यीशु कफरनहूम में आए। एक रोमी सूबेदार ने यह सुना, और वह जानता था कि प्रभु रोगियों को चंगा करने का आश्चर्यकर्म करते हैं। इस सूबेदार का एक अति प्रिय दास था, जो बीमार था। सूबेदार ने कुछ वयोवृद्ध लोगों को प्रभु से विनती करने भेजा कि वे सूबेदार के दास को चंगा कर दें। उन्होंने प्रभु यीशु से विनती की और कहा कि सूबेदार इस योग्य है कि उसकी सहायता की जाए, क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है।'' प्रभु यीशु उनके साथ चले, परन्तु जब वह कुछ दूर ही पर थे कि सूबेदार ने अपने मित्रों के द्वारा कहला भेजा कि हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरे घर आए। परन्तु वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। प्रभु यीशु ने एक अन्यजाति के विश्वास पर आश्चर्य किया। अपने पीछे आ रही यहूदियों की भीड़ से प्रभु ने कहा, ''मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।''

सूबेदार के मित्रों ने लौटकर उस दास को पूरी तरह स्वस्थ पाया जो लगभग मरने पर था।

लागू करना :

विश्वास परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करने का मार्ग है। यहाँ एक अन्यजाति सूबेदार प्रभु यीशु पर विश्वास करता है और जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभु यीशु के अधिकार और सामर्थ्य को मान्यता देता है।

क्या आप विश्वास करते हैं कि हमारा प्रभु सर्वसामर्थी हैं? याद रखें कि विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)

याद करें :

मरकुस 11:22 परमेश्वर पर विश्वास रखो।

प्रश्न :

1. कौन बीमार था?
2. प्रभु यीशु के पास कौन आए? उन्होंने क्या कहा?
3. सूबेदार ने प्रभु यीशु के पास क्या संदेश भेजा?
4. सेवक के साथ क्या हुआ?

✯✯✯✯

पाठ-29

दुष्टात्माओं का निकाला जाना

मरकुस 5:1-18

यह उन आश्चर्यकर्मों में से एक है, जिसने यह प्रकट किया कि प्रभु यीशु सर्वसामर्थी हैं। दुष्टात्मा ग्रसित एक व्यक्ति में से दुष्टात्मा को निकालने के द्वारा प्रभु ने दिखाया कि वे दुष्टात्मा पर भी अधिकार रखते हैं।

पाठ :

एक दिन प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ झील के पार गिरासेनियों के देश में गए। जब प्रभु नाव से उतरे, तब एक मनुष्य उनसे मिला जिसमें अशुद्ध आत्मा थी। यह मनुष्य कब्रों में रहा करता था और उसको कोई भी काबू में नहीं कर सकता था। वह बार-बार बेड़ियों और सांकलों से बाँधा गया था, परन्तु वह बेड़ियों और सांकलों के टुकड़े-टुकड़े कर देता था। वह लगातार कब्रों और पहाड़ों पर चिल्लाता और अपने आप को पत्थरों से घायल करता था। आस-पास के रहने वालो उससे डरते थे।

जब इस मनुष्य ने प्रभु यीशु को देखा, तब उसके अंदर के अशुद्ध आत्माओं को पता था कि वह कौन है। वह भागता हुआ आया और प्रभु को प्रणाम किया। फिर ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझसे क्या काम? मुझे पीड़ा न दे। क्योंकि प्रभु ने उससे कहा था, कि ''हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।''

प्रभु ने जब उससे उसका नाम पूछा, तब उसने कहा, ''मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।'' (रोमी सेना की एक टुकड़ी में छः हज़ार सैनिक होते थे)। उसके कहने का अर्थ यह था कि वह अनेक अशुद्ध आत्माओं से ग्रसित है। उसने प्रभु से बहुत विनती की कि उन्हें इस देश से बाहर न भेजे। वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उन्होंने प्रभु से विनती करके कहा, ''हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम उनके भीतर जाएँ। प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी और वे अशुद्ध आत्माएँ उस मनुष्य में से निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गईं।

और झुण्ड जो कोई दो हज़ार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील पर जा पड़ा और डूब मरा।

उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गाँवों में समाचार सुनाया, और लोग उसे देखने आए। वे उसको जिसमें दुष्टात्माएँ थीं, कपड़े पहिने और प्रभु के पास सचेत बैठे देखकर डर गए। उन्होंने प्रभु यीशु से विनती की कि वहाँ से चले जाएँ। जिसमें पहले दुष्टात्मा थी, वह प्रभु के साथ रहना चाहता था। परन्तु प्रभु ने उससे कहा, ''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए है।'' तब वह जाकर दिकपुलिस (जिसमें दस शहर आते हैं) में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने उसके लिए कैसे बड़े काम किए हैं। और सब अचम्भा करते थे।

लागू करना :

अविश्वासी लोग शैतान और उसकी आत्माओं के नियंत्रण में रहते हैं। यदि हम प्रभु यीशु पर विश्वास करें तो वह हमें शैतान की गुलामी से आज़ाद करने के लिए तैयार हैं। जो लोग बचाए गए हैं, उन्हें अपना अनुभव दूसरों को बताना चाहिए।

याद करें :

1 यूहन्ना 3:8 परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

प्रश्न :

1. अशुद्ध आत्मा से ग्रसित मनुष्य का नाम सेना कैसे पड़ा?
2. प्रभु को देखने पर दुष्टात्मा ने क्या कहा?
3. दुष्टात्मा ने प्रभु से क्या विनती की?
4. गिरासेन के लोगों ने प्रभु यीशु से क्या कहा?
5. प्रभु यीशु ने उस व्यक्ति से क्या करने को कहा, जिसमें से दुष्टात्मा निकाली गई थी?

✯✯✯✯

पाठ–30

दस कोढ़ी

लूका 17:11-19

प्रभु यीशु मसीह एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलकर जाते थे, और उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग ग्रसित लोगों को स्वस्थ किया। प्रभु यीशु ने उन सबको चंगा किया, जो उनके पास आए। आज हम दस कोढ़ियों की चंगाई के बारे में सीखेंगे।

पाठ :

एक बार प्रभु यीशु यरूशलेम जाते हुए रास्ते में एक गाँव से होकर गुजरे जहाँ उन्हें दस कोढ़ी मिले। वे दूर खड़े होकर ऊँचे शब्द से चिल्लाए, ''हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर!''

प्रभु यीशु उनकी आवश्यकता जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा, ''जाकर अपने आप को याजकों को दिखाओ।'' प्रभु ने यह इसलिए कहा, क्योंकि वह जानते थे कि यहूदी व्यवस्था के अनुसार एक याजक ही रोगमुक्त कोढ़ी की जाँच करके यह घोषणा कर सकता था कि वह अशुद्ध है या शुद्ध। कोढ़ियों ने आज्ञा मानी, और जाते ही जाते वे स्वस्थ हो गए।

उन कोढ़ियों में एक सामरी था। यहूदी लोग सामरियों को नीचा समझते थे। जब उसने देखा कि वह चंगा हो गया है, बड़े आनंद के साथ आकर प्रभु के चरणों पर गिरा और धन्यवाद करने लगा। सभी कोढ़ी रोगमुक्त हुए थे, परन्तु केवल एक प्रभु यीशु को धन्यवाद देने और परमेश्वर की बड़ाई करने लौटा।

प्रभु यीशु ने कहा, ''क्या दसों शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहाँ हैं?'' परमेश्वर हमसे धन्यवाद और आराधना की अपेक्षा करते हैं क्योंकि उन्होंने हमें पाप से बचाया है।

लागू करना :

प्रभु यीशु हमें अनेक आशीषें देते हैं और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर

भी देते हैं। प्रभु ने जो दिया उसके लिए धन्यवाद देना क्या हम याद रखते हैं? विशेषकर क्रूस पर आपके पापों को उठाने के लिए, वह आपसे धन्यवाद सुनना चाहते हैं। प्रभु यीशु बहुत प्रसन्न हुए जब सामरी उनको धन्यवाद देने लौटकर आया। प्रभु ने उससे कहा, ''उठकर चला जा।'' उसके पश्चात् सामरी का जीवन परिवर्तित हो गया। जो प्रभु यीशु के पास आता है उसका जीवन भी पूरी तरह बदल जाता है। कुलुस्सियों 3:15 में पौलुस कहते हैं ''धन्यवादी बने रहो।''

याद करें :

भजन संहिता 103:2 हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे। हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।

प्रश्न :

1. कितने कोढ़ी प्रभु यीशु से मिले?
2. प्रभु को देखकर वे क्या चिल्लाए?
3. कितने कोढ़ी स्वस्थ हुए?
4. प्रभु यीशु को धन्यवाद देने के लिए कितने वापस आए? जो आया वह कौन था?
5. इस पाठ से हम क्या सीखते हैं?

✯✯✯✯

पाठ–31

कनानी स्त्री

मत्ती 15:21–28

आज हम एक स्त्री के विषय में सीखेंगे, जिसने अपनी बेटी के लिए प्रभु यीशु पर महान विश्वास किया।

पाठ :

प्रभु यीशु रोगियों को चंगा करते हुए और लोगों को सिखाते हुए जगह–जगह जा रहे थे। एक दिन एक कनानी स्त्री रोते हुए प्रभु के पास आकर कहने लगी, ''हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।'' प्रभु ने उसे कुछ उत्तर नहीं दिया। चेलों ने प्रभु से विनती करके कहा, ''इसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है।'' प्रभु ने उत्तर दिया, ''मैं इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया हूँ।''

जब वह निरंतर विनती करती रही, तब प्रभु ने उससे कहा, ''लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।'' उसने अपनी विनती जारी रखी और कहा, ''सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।'' इस पर प्रभु यीशु ने उसे उत्तर दिया, ''हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिए वैसा ही हो।'' और उसकी बेटी उसी समय स्वस्थ हो गई।

लागू करना :

वास्तव में प्रभु यीशु उसके विश्वास की गहराई परख रहे थे। वह उस परीक्षा में विजयी हुई और प्रभु यीशु उसकी इच्छा पूरी करने में अत्यंत प्रसन्न थे। हमें सदैव नम्रता और विश्वास के साथ प्रभु के पास आना चाहिए। उस स्त्री ने केवल ''चूरचार'' की आस लगाई थी, परन्तु प्रभु ने उसे ''रोटी'' ही दी। हमारा प्रभु उदार दानी है। परमेश्वर का उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो। (2 कुरिन्थियों 9:15)।

याद करें :

भजन संहिता 9:12 वह दीन लोगों की दोहाई को नहीं भूलता।

प्रश्न :

1. वह स्त्री किस देश की थी?
2. प्रभु यीशु किस ''लड़कों'' की बात कर रहे थे?
3. उस स्त्री ने क्या उत्तर दिया?
4. प्रभु यीशु ने उसके लिए क्या किया?

✯✯✯✯

पाठ–32

प्रभु यीशु पानी पर चले

मत्ती 14:22–23

पिछले पाठ में हमने सीखा कि प्रभु यीशु बीमारी और अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार रखते हैं। आज हम सीखेंगे कि प्रभु अपनी सृष्टि पर भी अधिकार रखते हैं।

पाठ :

पाँच रोटी और दो मछली से 5000 लोगों को खिलाने के बाद चेलों को विश्वास करना चाहिए था, कि प्रभु के लिए कुछ असंभव नहीं है। परन्तु क्या तुम उस अवसर के बारे में जानते हो जब वे बहुत डर गए और शक से भर गए?

प्रभु यीशु ने अपने चेलों को नाव पर चढ़ाया ताकि वे गलील की झील के पास चले जाएँ। प्रभु स्वयं प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चलते गए। वे परमेश्वर के पुत्र थे और अपने पिता के साथ एकांत में बहुत समय व्यतीत करते थे।

पार जाने के लिए प्रभु की आज्ञानुसार चेले गलील की झील में काफी दूर निकल गए, और तेज हवा के कारण लहरें इतनी ऊँची उठ रही थीं कि उन्होंने सोचा कि नाव डूब जाएगी। प्रभु उनके साथ नहीं थे, और वे सब बहुत भयभीत थे। परन्तु प्रभु उनको भूले नहीं थे। हमारे जीवन की परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ हमें अपने परमेश्वर पर विश्वास करना सिखाती हैं। प्रभु रात के चौथे पहर (सुबह के 3 से 6 बजे के बीच का समय) तक रुक कर फिर चेलों के पास गए। जब चेलों ने तूफान के बीच किसी को पानी पर चलकर अपनी ओर आते देखा तो इतना अधिक डर गए कि प्रभु को नहीं पहचान पाए। उन्होंने सोचा कि कोई भूत होगा।

प्रभु यीशु ने उनसे कहा, ''डरो मत, मैं हूँ!'' प्रभु की आवाज़

सुनकर पतरस को हिम्मत हुई, उसने कहा, ''प्रभु मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।'' प्रभु ने कहा, ''आ'' पतरस प्रभु के पास जाने के लिए निडरतापूर्वक नाव से उतरा, परन्तु जब हवा को देखकर डर गया और डूबने लगा। पतरस ने चिल्लाकर कहा, ''हे प्रभु, मुझे बचा।'' प्रभु यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और दोनों नाव पर चढ़ गए। तुरंत हवा थम गई। तब नाव पर जितने लोग थे, उन्होंने दण्डवत करके कहा, ''सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।''

लागू करना :

हमारे जीवन में भी हमारे विरुद्ध तूफान आ सकते हैं। हो सकता है हम सोचें कि परमेश्वर बहुत दूर हैं और हमारे क्लेश के विषय में सचेत नहीं हैं। परन्तु हमारी सहायता करने के लिए प्रभु सदैव हाथ बढ़ाए रहते हैं। हमें पतरस की तरह आसपास नहीं देखना चाहिए, बल्कि केवल प्रभु यीशु की ओर देखना चाहिए। हमें उसी प्रभु की आराधना करनी चाहिए जो सबके ऊपर अधिकार रखते हैं। वही हमारा प्रभु, हमारा मार्गदर्शक और हमारा चरवाहा हैं, और हम उनके हाथों में सुरक्षित हैं।

याद करें :

याकूब 1:12 धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों से की है।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को कहाँ भेजा?
2. उन्हें भेजने के पश्चात् प्रभु कहाँ गए और क्यों?
3. जब चेले झील में थे तब क्या हुआ?
4. प्रभु नाव तक कैसे गए?
5. पतरस ने प्रभु यीशु से क्या कहा?
6. पतरस पानी में क्यों डूबने लगा?
7. इस घटना के तुरंत पहले प्रभु ने कौन सा आश्चर्यकर्म किया था?

☆☆☆☆

पाठ–33

अच्छा सामरी

लूका 10:30–37

हमारा प्रभु आश्चर्यकर्म करने वाला ही नहीं बल्कि आत्मिक सत्यों का शिक्षक भी है। आज हम एक दृष्टाँत सीखेंगे जो प्रभु ने लोगों को सिखाया। यह ''प्रेम'' के बारे में है।

पाठ :

एक मनुष्य *यरूशलेम से यरीहो जा रहा था। रास्ते में डाकुओं ने उसे लूट लिया, और मार–पीट कर उसे अधमरा छोड़ कर चले गए।

उसी रास्ते से एक याजक आया और उस असहाय मनुष्य को देखा। परन्तु वह न रुका और न ही परवाह की। वह ऐसे चला गया जैसे कि उसने देखा ही नहीं। कुछ समय पश्चात् एक लेवी वहाँ से निकला, परन्तु उसने भी घायल व्यक्ति की कोई परवाह न की। उसने भी उसे देखा और अपने रास्ते चला गया।

फिर एक सामरी यात्री वहाँ से निकला। जब उसने उस अधमरे व्यक्ति को देखा, तो उस पर तरस खाया। वह अपने गदहे पर से उतरकर उसके पास आया। और उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियाँ बाँधीं, और अपने गदहे पर चढ़ाकर सराय में ले गया और उसकी सेवा की। अगले दिन उसने सराय के मालिक को दो दीनार देकर कहा, ''इसकी सेवा करना, और जो तेरा और खर्चा होगा, वह मैं वापस आकर दे दूँगा।''

सामरी प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है। परमेश्वर से दूर रह कर हम भी उस घायल व्यक्ति की तरह हैं जो स्वयं अपनी सहायता नहीं कर

**यरूशलेम से यरीहो की दूरी 17 मील है। मृत सागर के उत्तर दिशा में यरदन नदी की ओर ढलान पर यह रास्ता है। यहाँ की घुमावदार सड़कें पहाड़ियों के बीच से होकर निकलती हैं जहाँ डाकू छिप सकते थे। इस मार्ग को खतरनाक माना जाता था।*

सकते। मात्र प्रभु यीशु मसीह जो हमारे लिए अपना प्राण देने आए, हमें लुटेरे शैतान से बचाकर उसके दिए पाप रूपी घाव को चंगा कर सकते हैं। हम यह भी सीखते हैं कि हमें उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जिनको उसकी आवश्यकता है।

उसने दाखरस और तेल उण्डेला;
मेरी आत्मा को चंगा किया,
यरीहो के किनारे अधमुआ पाया,
उसने दाखरस और तेल उण्डेला।

यीशु, यीशु यीशु (3)
मैंने उसको पा लिया (3)
मैंने यीशु को पा लिया।

याद करें :

1 यूहन्ना 4:11 जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।

प्रश्न :

1. उस मनुष्य को क्या हुआ जो यरीहो जा रहा था?
2. उसके पास से गुजरने वाले पहले दो व्यक्तियों ने क्या किया?
3. अगला कौन आया, और उसने क्या किया?
4. उसने सराय के मालिक से क्या कहा?
5. इस घटना से हम क्या सीखते हैं?

☆☆☆☆

पाठ–34

प्रभु यीशु का रूपान्तरण

मत्ती 17:1–8

प्रभु यीशु मसीह यद्यपि मनुष्य बने, तौभी वे वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हैं। इसका अर्थ है कि वह महिमा के परमेश्वर हैं। हम सीखेंगे कि कैसे हमारे प्रभु ने अपने तीन शिष्यों को अपनी स्वर्गीय महिमा की झलक दिखाई।

पाठ :

प्रभु यीशु के तीन चेले पतरस, याकूब और यूहन्ना प्रभु से बहुत प्रेम करते थे और प्रभु के करीब थे। एक दिन प्रभु उनको एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए और वहाँ उनके सामने प्रभु का रूपान्तर हुआ। प्रभु का वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। मूसा और एलिय्याह भी महिमा के तेज में प्रभु से बाते करते हुए दिखाई दिए। वह प्रभु की मृत्यु की चर्चा कर रहे थे, जिसकी पूर्णता यरूशलेम में होने वाली थी। उन दो पुरुषों ने पृथ्वी पर रहते समय ऊँचे पहाड़ पर परमेश्वर से बातें की थी। अब वे पृथ्वी पर आए और एक पहाड़ पर परमेश्वर के पुत्र से बातें कर रहे थे।

तब एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और वे भयभीत हो गए। और बादल में से यह शब्द सुनाई दिए, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ, इस की सुनो।'' यह हमें उस आकाशवाणी का स्मरण दिलाता है जब प्रभु यीशु का बपतिस्मा हुआ था। चेले बहुत डर गए और मुँह के बल गिर गए। प्रभु ने उन्हें छूकर कहा, ''उठो, डरो मत।''

वे उठे बादल छंट चुके थे, और उन्होंने प्रभु यीशु को छोड़ और किसी को नहीं देखा। प्रभु के साथ वे पहाड़ से उतर गए। कुछ वर्षो बाद पतरस अपनी पत्री में लिखते हैं कि उस दिन उन्होंने क्या देखा। (2 पतरस 1:16–19)।

लागू करना :

प्रभु की मृत्यु से पहले उनकी महिमा की झलक देखने का सौभाग्य तीन शिष्यों को दिया गया। प्रभु की मृत्यु हुई, परन्तु वे महिमा-मंडित शरीर में जी उठे, और शीघ्र आने वाले हैं। जब वह आएंगे, तब हम भी उनके समान हो जाएँगे, क्योंकि हम प्रभु को जैसे हैं, वैसे ही देखेंगे। इस कारण हमें इस संसार में प्रभु की महिमा के भागीदार की तरह जीवन व्यतीत करना चाहिए।

याद करें :

कुलुस्सियों 3:4 जब मसीह, जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु के साथ पहाड़ पर कौन-कौन गए?
2. उन्हें कौन दो लोग वहाँ मिले?
3. वे किस विषय पर चर्चा कर रहे थे?
4. उन्होंने क्या सुना?
5. बादल के छंट जाने पर उन्होंने किसे देखा?

★★★★

पाठ–35

लाज़र

यूहन्ना 11:1-34

हम जानते हैं कि प्रभु यीशु ने अनेक रोमियों को चंगा करने के आश्चर्यकर्म किए। उससे बढ़कर उन्होंने मृतकों को जीवित किया। याईर की बेटी की मृत्यु के तुरंत बाद प्रभु ने उसे जीवित किया।

गाड़े जाने के लिए ले जाते समय रास्ते में एक जवान को प्रभु ने जीवित किया। आज हम सीखेंगे कि प्रभु ने एक व्यक्ति को जीवित किया जिसकी मृत्यु को चार दिन बीत चुके थे।

पाठ :

बैतनिय्याह गाँव में दो बहनें मार्था और मरियम और उनका भाई लाज़र रहते थे। यह परिवार परमेश्वर का भय मानने वाला और प्रभु यीशु से प्रेम करने वाला था। प्रभु यीशु भी उनसे प्रेम करते थे, और अक्सर उन के घर जाते थे।

एक दिन लाज़र बीमार हो गया और उनके घर पर मातम छा गया।

उसकी बहनों ने प्रभु यीशु के पास संदेश भेजा। उन्हें आशा थी कि प्रभु तुरंत आकर उसे स्वस्थ कर देंगे। उन्होंने संदेश भेजा था कि ''जिससे तू प्रेम करता है, वह बीमार है।'' संदेश मिलने के बावजूद प्रभु दो दिन और वहीं ठहरे रहे जहाँ थे। इस दौरान लाज़र की मृत्यु हो गई—बहुत दुख और निराशा के साथ बहनों ने उसे दफनाने की तैयारी की। उनकी प्रथा के अनुसार उसके शरीर को कफन से लपेटा गया और सिर के चारों ओर कपड़ बाँधा गया। फिर उसे कब्र में रखा गया। वह एक गुफा थी जिसके प्रवेश द्वार पर पत्थर रखा गया।

उस समय प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''आओ हम यहूदिया को चलें। हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।'' जब चेले यह समझ नहीं पाए तब प्रभु ने उनसे स्पष्ट कर दिया कि

लाज़र मर गया है। जब वे बैतनिय्याह पहुँचे, मार्था प्रभु से मिलने आई, और बोली, ''हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई कदापि न मरता।'' मरियम ने भी आकर यही शब्द कहे। मार्था और मरियम के आस-पास बहुत लोग एकत्र हुए। उनका दुख देखकर प्रभु यीशु भी रोए। प्रभु ने पूछा, ''तुमने उसे कहाँ रखा है?'' उन्होंने कहा, ''हे प्रभु, चलकर देख ले।'' प्रभु ने उनसे कहा कि पत्थर हटाओ। मार्था ने कहा, ''हे प्रभु, उसमें से तो अब दुर्गंध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।''

प्रभु ने उससे कहा, ''क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?''

उन्होंने पत्थर हटाया। प्रभु यीशु ने स्वर्ग की तरफ देखकर अपने पिता का धन्यवाद किया। फिर बड़े शब्द से पुकारा, ''हे लाज़र, निकल आ!'' लाज़र कफन से बँधा हुआ निकल आया। प्रभु ने कहा, ''उसे खोल दो, और जाने दो।''

जितनों ने यह देखा उसमें से अनेकों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। प्रभु ने यह प्रकट कर दिया कि वे जीवन और मृत्यु पर अधिकार रखते हैं, और उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यही यीशु मसीह हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता हैं। क्या आपने उन पर विश्वास किया?

याद करें :

यूहन्ना 5:26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।

प्रश्न :

1. लाज़र किस गाँव में रहता था?
2. उसकी बहनें कौन थीं?
3. प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को कैसे बताया कि लाज़र की मृत्यु हो गई?
4. प्रभु यीशु से मिलने पर मार्था ने क्या कहा?
5. प्रभु यीशु ने लाज़र को कैसे जीवित किया?

✩✩✩✩

पाठ-36

प्रभु यीशु का विजय प्रवेश

मत्ती 21:1-17; लूका 19:29-40; जकर्याह 9:9

क्या आपने कभी किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के सम्मान में लोगों को जुलूस निकालते हुए देखा है? जब कोई व्यक्ति प्रसिद्ध होकर अपने शहर लौटता है तब उसका भव्य स्वागत होता है। आज हम सीखेंगे कि कैसे प्रभु यीशु मसीह का स्वागत किया गया।

पाठ :

पुराने नियम में जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी कि इस्राएल के लिए जिस राजा का वायदा किया गया है, वह गदहे पर, वरन गदही के बच्चे पर चढ़कर यरूशलेम में प्रवेश करेगा। सही समय के आने पर प्रभु यीशु ने अपने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, ''सामने के गाँव में जाओ, वहाँ पहुँचते ही एक गदही बंधी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा। उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ। यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहना कि प्रभु को इसका प्रयोजन है, तब वह तुरंत भेज देगा।'' प्रभु की आज्ञानुसार चेले गदही और बच्चे को लाए, उन पर कपड़े डाल दिए। प्रभु उस पर बैठ गए। तब बहुत से लोगों ने कपड़े, पेड़ों की डालियाँ और फूल-पत्ते मार्ग में बिछाए। भीड़ उनके आगे-पीछे पुकार-पुकार कर कहती गई, ''दाऊद के संतान को होशाना, धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश मे होशाना।''

इस प्रकार उन्होंने आनंद मनाया और परमेश्वर के पुत्र का सम्मान किया जैसे भविष्यद्वक्ता ने कहा था।

प्रभु यरूशलेम में आए और मंदिर में गए। वहाँ उन्होंने लोगों को लेन-देन और व्यापार करते देखा। प्रभु ने उन सब को वहाँ से बाहर निकाल दिया, और उन की चौकियाँ उलट दीं। और कहा, ''मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा, परन्तु तुम ने उसे डाकुओं की खोह बना दी है।''

प्रभु यीशु मंदिर में बैठे और उन्होंने अनेक रोगियों को चंगा किया। परन्तु महायाजक और शास्त्री बहुत क्रोधित हुए।

आज परमेश्वर का मंदिर विश्वासी का हृदय है। मसीह से जुड़ा हुआ हृदय उनका सम्मान करेगा उसका मंदिर शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। क्या प्रभु आप के हृदय में वास करते हैं?

याद करें :

जकर्याह 9:9 देख, तेरा राजा तेरे पास आता है, वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।''

प्रश्न :

1. सवारी के लिए प्रभु को गदहा कैसे मिला?
2. लोगों ने क्या किया? उन्होंने क्या कहा?
3. मंदिर का क्या दृश्य था?
4. प्रभु यीशु ने मंदिर को कैसे साफ किया?
5. आज परमेश्वर का मंदिर क्या है?

☆☆☆☆

पाठ–37

यहूदा इस्करियोती

मत्ती 26:47–56; 27:3–10

प्रभु यीशु के पीछे अक्सर भीड़ रहती थी। कुछ लोग स्वस्थ होने आते थे और कुछ उनकी शिक्षा सुनने और कुछ लोग उनके आश्चर्यकर्मों को देखने के लिए। अक्सर लोग खुशी से उनका स्वागत करते और उनकी बातें ध्यान देकर सुनते थे। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे, जो उन्हें पसंद नहीं करते थे और समस्या पैदा करने का प्रयत्न करते थे।

पाठ :

महायाजक और शास्त्री, व्यवस्था और परंपरा का पालन करते थे, परन्तु उनके आंतरिक सत्यों का नहीं। परमेश्वर से प्रेम करने और उनकी सेवा करने से अधिक वे अपने लिए ओहदे और आदर की खोज में लगे रहते थे। याजक लोग प्रभु से नफरत करते थे क्योंकि प्रभु यीशु गरीबों के बीच में रहते और पापियों से मित्रता रखते थे। परन्तु प्रभु के पीछे चलने वाली भीड़ के कारण वे प्रभु के विरुद्ध कुछ न कर सके। उन्होंने निश्चय किया कि उसके विरुद्ध झूठे दोष लगाकर, गुप्त रूप से पकड़वाकर रोमी अधिकारी को सौंप देंगे।

यहूदा इस्करियोती प्रभु के बारह शिष्यों में से एक था, परन्तु वह धन से प्रेम करता था, प्रभु से नहीं। वह प्रधान याजकों और शास्त्रियों के पास गया कि प्रभु को गुप्त रूप से पकड़वा दे, जिसके बदले उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के देने का वायदा किया। संभवतः यहूदा ने सोचा होगा कि प्रभु यीशु, जिसने दुष्टात्माओं को निकाला रोगियों को चंगा किया और मृतकों को जिलाया, वह स्वयं को उनके हाथ से बचा सकेगा, और मुझे चाँदी के सिक्के भी मिल जाएँगे।

यहूदा ने यहूदी अगुओं से धन लेकर उन्हें बता दिया कि प्रभु कहां हैं। यहूदा जानता था कि रात को अपने शिष्यों के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रभु गतसमनी के बगीचे में जाएँगे। यहूदा ने उनसे कहा, कि वह

प्रभु यीशु को चूमेगा, ताकि वे लोग समझ जाएं कि किसे पकड़ना है। सिपाहियों की एक बड़ी भीड़ और याजकों के सेवक रात को बागीचे में तलवारें और मशालें लेकर ऐसे गए जैसे किसी अपराधी को पकड़ने गए हों।

यहूदा ने आगे बढ़ कर प्रभु को चूमा, और सिपाहियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस गड़बड़ी के बीच में पतरस ने तलवार निकाली और महायाजक के दास का कान काट दिया। प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाकर उसका कान ठीक कर दिया। फिर पतरस से कहा, ''अपनी तलवार म्यान में रख ले, क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नष्ट होंगे। क्या तू नहीं जानता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? परन्तु अवश्य है कि मेरे बारे में पवित्रशास्त्र की भविष्यद्वाणी पूरी हो।''

जब यहूदा ने देखा कि प्रभु को मृत्युदंड दिया गया तब वह ग्लानि से भर गया। उसने चाँदी के तीस सिक्के लेकर प्रधान याजकों के पास जाकर कहा, ''मैंने निर्दोष को मृत्यु के लिए पकड़वाकर पाप किया है!'' परन्तु उन्होंने परवाह नहीं की। वह उन सिक्कों को मंदिर में फेंककर चला गया और जाकर अपने आप को फाँसी दी।

यदि हम अपने उद्धारकर्ता के प्रति वफादार नहीं रहेंगे तो दिव्य दंड निश्चित है। अपने जीवन में यहूदा ने कभी भी यीशु मसीह को प्रभु नहीं कहा। उसके विषय में हमारे प्रभु ने स्वयं कहा कि वह शैतान है। वह उद्धारकर्ता के साथ रहा, पर स्वयं उद्धार नहीं पाया।

याद करें :

भजन संहिता 51:10 हे परमेश्वर, मेरे अंदर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नए सिरे से उत्पन्न कर।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु को कौन मारना चाहता था?
2. उन्होंने उसके लिए कौन सा मार्ग अपनाया।
3. उनको प्रभु के पास तक किसने पहुँचाया?
4. उसे प्रभु को पकड़वाने के बदले में क्या मिला?
5. उसका अन्त कैसा था?

☆☆☆☆

पाठ-38

पतरस का इंकार

मरकुस 14:29-31; 62-72

पिछले पाठ में हमने प्रभु यीशु के एक शिष्य यहूदा के बारे में सीखा था। उसने क्या किया? उसके साथ क्या हुआ? आज हम सीखेंगे, कि प्रभु यीशु के पकड़वाए जाने के पश्चात् पतरस ने क्या किया।

पाठ :

जिस दिन यहूदा प्रभु यीशु के साथ विश्वासघात करने गया था, उसी दिन प्रभु अपने अन्य शिष्यों को जैतून के पहाड़ पर ले गए। वहाँ प्रभु ने उनसे कहा, ''आज रात तुम सब ठोकर खाओगे और मेरे कारण तितर-बितर हो जाओगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे।'' तब पतरस ने सबके सामने कहा, ''यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा!''

सर्वज्ञानी प्रभु ने उससे कहा, ''आज रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।'' चेले प्रभु की बातों से दुखी हुए परन्तु समझ न सके। पतरस ने फिर कहा, ''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तेरा इंकार कभी न करूँगा।'' इसी प्रकार और सबने भी कहा।

इसके पश्चात् प्रभु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी के बाग़ीचे में गए। वहाँ से यहूदी और सिपाही प्रभु को पकड़कर प्रधान याजकों के सामने लेकर गए। जब प्रभु को पकड़ा गया, तब उनके सभी शिष्य उनको छोड़कर भाग गए। पतरस कुछ दूरी रखकर प्रभु के पीछे-पीछे महायाजक के घर तक गया। वहाँ से वह प्रभु को बँधा हुआ और महायाजक के सामने खड़ा देख सकता था।

आँगन में आग जल रही थी और बहुत लोग आग ताप रहे थे क्योंकि सर्दी बहुत थी। और पतरस उनके साथ खड़ा था। उसने सोचा कि उसे कोई नहीं पहचानेगा, और वहाँ खड़े होकर वह देख सकेगा कि

प्रभु के साथ क्या हो रहा है। उस घर की एक स्त्री ने पतरस को ध्यान से देखकर कहा, ''यह भी यीशु नासरी के साथ था।''

तुरंत ही पतरस ने इंकार करके कहा, ''मैं उसे नहीं जानता, और न ही समझता हूँ कि तू क्या कह रही है।'' वहाँ से पतरस बाहर द्वार पर गया, तभी मुर्गे ने बाँग दी। उस दासी ने उसे देखकर फिर आस-पास खड़े लोगों से कहा, ''यह उनमें से एक है।'' पतरस ने इंकार कर दिया। कुछ समय के पश्चात् वहाँ खड़े लोगों ने पतरस से कहा, ''निश्चय तू उनमें से एक है, क्योंकि तू गलीली भी है।'' तब वह धिक्कारने और शपथ खाने लगा, ''मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता।'' तब तुरंत दूसरी बार मुर्गे ने बाँग दी। पतरस को प्रभु की कही बात स्मरण हो आई, ''मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इंकार करेगा।'' और वह इस बात को सोचकर रोने लगा।

अक्सर हम भी निडरता से कह देते हैं कि हम क्या नहीं करेंगे या हम क्या कर सकते हैं। फिर भी जब परीक्षाएँ आती हैं, हम बुरी तरह असफल हो जाते हैं। तब हमें आंसुओं के साथ पश्चाताप करना पड़ता है। इसलिए हम घमंड न करें, बल्कि नम्रता के साथ प्रभु पर विश्वास करते हुए प्रार्थना करें कि परीक्षा के समय प्रभु हमें सम्भालें। यदि तुम सोचते हो कि तुम स्थिर खड़े हो, तो सावधान रहो, कि गिर न पड़ो। (1 कुरिन्थियों 10:12)।

याद करें :

1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

प्रश्न :

1. किसने प्रभु का इंकार किया?
2. कितनी बार इंकार किया?
3. प्रभु ने अपने शिष्यों को पहले से ही क्या बताया था?
4. कभी-कभी हम प्रभु का इंकार कैसे करते हैं?
5. हम परीक्षाओं पर कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं?

☆☆☆☆

पाठ–39

पुनरुत्थान

मत्ती 28

हमने सीखा कि किस प्रकार धोखे से प्रभु यीशु को उनके शत्रुओं के हाथ पकड़वाया गया, और किस प्रकार पतरस ने उनका इन्कार किया। रोमी हाकिम पीलातुस ने यहूदियों, उनके याजकों और पुरनियों की माँग पर प्रभु यीशु को मृत्युदंड दे दिया। उन्होंने सोचा कि वे प्रभु के जीवन का अंत कर रहे हैं, परन्तु वह तो निश्चय ही हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना थी।

पाठ :

क्रूस पर प्रभु की मृत्यु के समय, उनसे प्रेम करने वाले अनेक लोग वहाँ खड़े यह देख रहे थे। उनमें कई स्त्रियाँ भी थीं। बाद में अरिमतिया के यूसुफ ने जो यहूदियों का शासक था और प्रभु से प्रेम करता था, पीलातुस से प्रभु यीशु का शव माँगा कि उसे कब्र में रखे। प्रभु के एक और गुप्त शिष्य, नीकुदेमुस ने यूसुफ की सहायता की और दोनों ने मिलकर प्रभु के शरीर को गाड़े जाने के लिए तैयार किया और चट्टान में खुदवाई नई कब्र में रखा और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का दिया।

फिर यहूदियों को स्मरण आया कि प्रभु यीशु ने कहा था कि वे तीसरे दिन मृतकों में से जी उठेंगे। उन्होंने सोचा कि प्रभु के चेले उनके शरीर को चुरा ले जाएँगे, इसलिए उन्होंने हाकिम पर दबाव डाला कि कब्र को सुरक्षित रखे। अतः पीलातुस ने कब्र के पत्थर पर मोहर लगवा दी और रखवाली के लिए पहरुए लगा दिए।

तीसरे दिन, सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे प्रभु यीशु के शरीर पर लगाने के लिए सुगन्धित वस्तुएँ लेकर कुछ स्त्रियाँ कब्र पर आईं। रास्ते में वे आपस में कहती थीं, ''हमारे लिए कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?'' जब उन्होंने आँखें उठाईं, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ

है, परन्तु प्रभु की देह वहाँ नहीं थी। कब्र खाली थी, परन्तु कपड़े वहीं थे। उन्होंने एक स्वर्गदूत को देखा जिसने उनसे कहा, "मत डरो, तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह यहाँ नहीं है। अपने वचन के अनुसार वह जी उठा है। अब शीघ्र जाओ और उसके चेलों से कहो कि प्रभु जी उठा है।" वे इन शब्दों पर विश्वास न कर सकीं।

वे बड़े भय और आनंद के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं। जी उठने के बाद प्रभु पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिए। उसके पश्चात् चेलों को और अन्य लोगों को। उन्होंने प्रभु को देखा, छुआ और प्रभु से बातें कीं।

प्रभु यीशु के समान और कोई नहीं है। अनेक महापुरुष जीए और मर गए और वहीं उनका अंत हो गया। परन्तु प्रभु यीशु जो जीवन का राजकुमार है, वह मृतकों में से जी उठे। मृत्यु उन्हें अपने वश में न रख सकी, क्योंकि वह परमेश्वर के पुत्र हैं। वह सदाकाल के लिए जीवित हैं। यदि आप उनके हो जाएँगे तो आप भी अनंत जीवन के उत्तराधिकारी हो जाएँगे।

याद करें :

भजन संहिता 16:10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु किस दिन मृतकों मे से जी उठे थे?
2. उन्होंने प्रभु की कब्र को कैसे सुरक्षित रखा?
3. जीवित होने के पश्चात् सबसे पहले प्रभु किसके सामने प्रगट हुए?
4. प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को क्या प्राप्त होता है?
5. परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह में और संसार के महापुरुष कहलाने वालों के बीच क्या अन्तर है?

✯✯✯✯

पाठ–40

स्वर्गारोहण

प्रेरितों के काम 1:1-14

पिछले पाठ में हमने प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में सीखा। आज हम सीखेंगे कि प्रभु कैसे अपने पिता के पास वापस गए।

पाठ :

जी उठने के पश्चात् प्रभु यीशु अनेकों के सामने प्रगट गए। क्या आपको याद है कि वे कौन–कौन लोग थे? प्रभु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में अनेक बातें प्रेरितों को सिखाईं। प्रभु ने उनसे कहा कि वे सारे संसार में प्रभु के लिए गवाह बन जाएँ। वे लोग कह सके, ''हम जानते हैं कि प्रभु यीशु आज जीवित हैं। मृतकों में से जी उठने के पश्चात् हमने प्रभु को देखा और प्रभु से बातचीत की।''

चालीस दिनों तक, अलग–अलग अवसरों पर प्रभु उनके सामने प्रगट हुए। फिर प्रभु अपने शिष्यों को लेकर जैतून के पहाड़ पर गए और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। वहाँ प्रभु ने उन्हें बताया कि जब पवित्र आत्मा आएगा, तब वे सामर्थ प्राप्त करेंगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया और पृथ्वी की छोर तक प्रभु के गवाह होंगे। यह कहने के पश्चात् प्रभु उनकी आँखों के सामने उठा लिए गए और बादल ने प्रभु को उनकी आँखों से छिपा लिया। जब वे आश्चर्य से ऊपर देख रहे थे, तो दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। उनके पास परमेश्वर की ओर से संदेश था। उन्होंने कहा, ''हे गलीली पुरुषों, तुम क्या खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है।, उसी रीति से वह फिर आएगा।'' उन्हें याद आया कि उनके साथ रहते समय प्रभु ने कहा था कि वे फिर से वापस आएँगे (यूहन्ना 14:3)।

प्रेरितों और अन्य विश्वासियों ने, प्रभु के भाइयों और स्त्रियों ने, जिन्होंने प्रभु से प्रेम किया और सेवा की, इस वायदे पर विश्वास किया और शांति प्राप्त की। प्रभु की आज्ञानुसार वे यरूशलेम को लौटे और अधिक समय तक एक साथ प्रार्थना में व्यतीत किया।

प्रभु ने उन्हें ऐसी कई बातें बताईं जो प्रभु के आगमन के चिह्न होंगे। आज संसार में ये चिह्न देखे जा सकते हैं। भूकम्प और युद्ध, बीमारियाँ और दुष्टता सारे संसार में फैली है, जो हमें यह बताती है कि प्रभु का आगमन बहुत निकट है।

इस बार प्रभु का आगमन अपने लोगों को अपने साथ ले जाने के लिए होगा। अर्थात् उनको जिन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास करके अपने पापों की क्षमा प्राप्त की है। क्या आप उसमें होंगे?

याद करें :

यूहन्ना 14:3 यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा।

प्रश्न :

1. पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु कितने दिनों तक लोगों को दिखाई देते रहे?
2. किस स्थान से प्रभु यीशु स्वर्ग पर उठा लिए गए थे?
3. सफेद वस्त्रों में आए दो पुरुषों ने शिष्यों से क्या कहा?
4. प्रभु यीशु वापस क्यों आ रहे हैं?
5. प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात् शिष्यों ने क्या किया?

☆☆☆☆